SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 25 • ISSUE 04 • JUNE 2026

हिन्दी मासिक

जून 2026

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

सहाबा-ए-किराम और अहले बैत से मुहब्बत

हम अहले सुन्नत की विशेषता है कि हम सहाबा की महानता और उनकी श्रेष्ठता के कायल हैं और अहले बैत से मुहब्बत रखते हैं, हमें अपने इस सरमाए पर गर्व है।

यह हमारी पहचान है हम किसी कीमत पर भी इस को छोड़ने के लिए तैयार नहीं, हम खुलफ़ा – ए – राशिदीन को नबी करीम सल्ल. का उत्तराधिकारी क्रमानुसार मानते हैं। पहले खलीफा हज़रत अबू बकर सिद्दीक रजि0, दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर फारूक रजि0, तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान गनी रज़ि0 और चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अली मुरतजा रज़ि0 हैं, उन की खिलाफ़त की सत्यता के हम कायल हैं, हम हज़राते हसनैन रज़ि0 के इक़दाम को बिलकुल उचित समझते हैं।

(हज़रत मौलाना अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0)

एक प्रति ₹40/=

वार्षिक ₹400/=

Scanned with OKEN Scanner

सरपरस्त
ह़ज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल ह़ई ह़सनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
समयः (8:00 am to 1:00 pm)
Whats'app & Call:
Mob. 9559844716
E-mail:sachcharahi@nadwa.in
https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 40/-
वार्षिक	₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक) 60 युएस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

जून 2026 वर्ष 25 अंक 04

ईमान है मेरा

या रब तू पाक ज़ात है ईमान है मेरा।
या रब तेरी सिफात पर ईमान है मेरा।।
मुहम्मद नबी मखलूक में अफ़्ज़ल तरीन हैं।
लेकिन हैं तेरे बंदे ईमान है मेरा।।
खुलफा–ए–राशिदीन सब मक़बूल हैं तेरे।
जन्नत के वह मकीं हैं ईमान है मेरा।।
हजरत हसन हुसैन नवासे रसूल के।
दोनों हुए शहीद हैं ईमान है मेरा।।
असहाबे नबी से हुआ राज़ी तू ऐ खुदा।
हैं तुझ से वह राजी सभी ईमान है मेरा।।
या रब तेरे नबी पर लाखों तेरे सलाम।
आसी पे भी करम का इंनआम हो तेरा।।

(आसी लखनवी)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताह़ा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

Scanned with OKEN Scanner

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
दुनिया के बुत कदों में	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	10
समाज की बुराईयाँ	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	12
बू बक्रो उमर उस्मानो अली (पद्य)	हज़रत मौ0 सै0 शाह नफीसुल हुसैनी रह0	14
क्या है हज और कुरबानी	इं0 जावेद इक़बाल	15
माँ–बाप की कद्र करो!	सैय्यद सुफयान अहमद नदवी लखनवी	18
मज़दूर वर्ग और इस्लाम धर्म	डॉ0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	21
हज के बाद ज़िन्दगी कैसे गुज़ारें	जमाल अहमद नदवी	23
रोज़ी रोटी और मानसिक तनाव	अनवर हुसैन	24
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	25
हिजरी नए साल का संदेश	मौलाना मो0 ज़ैनुलहक़ नदवी	26
डिजिटल पड़ोस	इरफान वहीद	28
मुस्लिम व्यक्ति, मुस्लिम परिवार	मुहम्मद इक़बाल नदवी	33
नदवतुल उलमा में दो दिवसीय वर्कशाप	मौलाना मुहम्मद जुबैर अहमद नदवी	35
दारुल उलूम नदवतुल उलमा	नौशाद खान नदवी	37
स्वास्थ्य	डॉ0 विजय सेठ	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू अब्दुर्रहमान नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

Scanned with OKEN Scanner

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-कहफः-

(यह मक्की सूरत है और इसमें एक सौ दस आयतें और 12 रुकूअ़ हैं)

अनुवादः—

अस्ल प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने अपने बन्दे पर किताब उतारी और उसमें कोई जटिलता नहीं रखी(1) (जीवन व्यवस्था को) ठीक रखने वाली, ताकि लोगों को उसके सख़्त अज़ाब से डराए और उन ईमान वालों को जो अच्छे काम करते हैं शुभ समाचार दे दे कि उनके लिए अच्छा बदला है(2) वे उसी में हमेशा रहेंगे(3) और उन लोगों को ख़बरदार कर दे जो कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बना लिया है(4) उन्हें इसकी कुछ भी जानकारी नहीं और न उनके बाप दादा को है[2], बहुत भारी बात है जो उनके मुँह से निकल रही है, जो वे बक रहे हैं वह सरासर झूठ है(5) अगर उन्होंने यह बात न मानी तो लगता है कि आप उनके पीछे अपनी जान खपा देंगे[3](6) ज़मीन पर जो भी है उसको हमने उसके लिए शोभा बना दिया है ताकि हम जाँच लें कि उनमें कौन बेहतर से बेहतर काम करने वाला है(7) और निश्चित रूप से ही उस पर जो भी है उसको हम चटियल मैदान कर देने वाले हैं(8) क्या आप का विचार है कि गुफा और तख़्ती वाले हमारे निशानियों में एक अचम्भा थे[4](9) जब वे नवजवान गुफा के पास आए तो उन्होंने दुआ की कि ऐ हमारे पालनहार! अपने पास से हमें रहमत (दया) से सम्मानित कर और हमें अपने (इस) मामले में भलाई प्रदान कर दे(10) बस हमने गुफा में कुछ वर्षों के लिए उनको कान थपक कर सुला दिया(11) फिर हमने उनको उठाया ताकि हम जान लें कि जितनी अवधि तक वे ठहरे उसको दोनों पक्षों में से कौन अधिक ठीक गिनने वाला है(12) हम आपको उनकी कहानी ठीक ठीक सुनाते हैं, वे कुछ नवजवान थे जो अपने पालनहार पर ईमान लाए और हमने उनको अधिक सूझ बूझ से सम्मानित किया(13) और उस समय हमने उनके दिलों को शक्ति दी जब वे खडे हुए और कहने लगे हमारा पालनहार आसमानों और ज़मीन का पालनहार है, उसके सिवा हम किसी पूज्य को बिल्कुल नहीं पुकारते (अगर हमने ऐसा किया) तो हमने ज़रूर बड़ी लचर बात कही(14) यह हमारी क़ौम के लोग हैं जिन्होंने उसके अलावा पूज्य बना रखे हैं, वे अपने लिए कोई खुला प्रमाण क्यों नहीं ले आते, बस उससे बढ़ कर अन्यायी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे(15) और (ऐ साथियो!) जब तुम उनसे और जिनको वे अल्लाह के सिवा पूजते हैं अलग हो गये तो अब (चल कर) गुफा में शरण लो, तुम्हारा पालनहार तुम्हारे लिए अपनी रहमत (दया) खोल देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे काम में आसानी उपलब्ध कराएगा[5](16) और आप देखें कि सूरज जब निकलता तो उनकी गुफा की दाईं ओर से हो कर गुज़र जाता और जब डूबता तो उनसे कतरा कर बाईं ओर से निकल जाता और वे उसके एक खुले स्थान में थे, यह अल्लाह की एक निशानी है, जिसको अल्लाह हिदायत दे (सत्यमार्ग दिखाए) वही सत्य मार्ग पर है और जिसको पथ भ्रष्ट कर दे तो आपको उसके लिए कोई सहायक नहीं मिल सकता जो उसका मार्ग—दर्शन करने वाला हो(17) और आप (उनको देखते) तो उनको जागता समझते जब

Scanned with OKEN Scanner

कि वे सो रहे थे और हम उनको दाएं–बाएं करवट देते रहते थे और उनका कुत्ता दोनों हाथ पसारे चौखट पर (बैठा) था, अगर आप उनको झांक कर देखते तो पीठ फेर कर भाग निकलते और निश्चित रूप से आपके भीतर उनका आतंक समा जाता(18)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. इस सूरह के उतरने की पृष्ट भूमि यह घटना बताई जाती है कि मक्के के सरदारों ने यहूदी विद्वानों से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में पुछवाया था तो उन्होंने कहा कि उनसे तीन सवाल करो, अगर वे सही जवाब दें तो वे पैगम्बर हैं, एक गुफ़ा में छिपने वाले नवयुवकों के बारे में, दूसरे उस व्यक्ति के बारे में जिसने पूरब से पश्चिम तक पूरी दुनिया की यात्रा की, और तीसरे रूह (आत्मा) के बारे में, उन सरदारों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर ये तीन प्रश्न किये, दो प्रश्नों के उत्तर में यह सूरह उतरी और अंतिम प्रश्न का उत्तर सूरः इस्रा में दिया गया है।

2. कोई ज्ञानात्मक नियम या शोध न उनके पास न उनके पूर्वजों के पास था जिनके अनुसरण में वे इतनी भारी बात कह रहे हैं।

3. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुश्रिकों के विरोधात्मक व्यवहार और लगातार इन्कार से बड़ी चोट लगती थी, आपको तसल्ली दी जा रही है कि आपने अपना काम कर दिया और दुनिया तो परीक्षा स्थल है, कुछ सफल होंगे और कुछ असफल, तो आप उनके न मानने पर परेशान न हों, आगे यह सब चमक– दमक समाप्त हो जाएगी और सबको अपने किये का बदला मिल जाएगा।

4. यानी अल्लाह की महान शक्ति के सामने असहाब–ए–कहफ (गुफा वालों) की कहानी कुछ अचंभा नहीं जिसे हद से अधिक आश्चर्यजनक समझा जाए, "रकीम" लिखी हुई तख़्ती को कहते हैं, इसके विभिन्न अर्थ बयान किए गए हैं, बहुत से लोगों की राय है कि उनके मरने के बाद उनके नामों की तख़्ती वहां लगा दी गई थी इसलिए उनको "अस्हाबुर्रकीम" (तख़्ती वाले) कहा जाता है, कुछ लोग उस गुफा के नीचे वाली घाटी का नाम रकीम बताते हैं, कुछ लोग उस पहाड़ का नाम रक़ीम बताते हैं जिसमें यह गुफ़ा थी, अल्लाह ही बेहतर जानता है।

5. यह कुछ नवजवान थे जो एक मुश्रिक राजा के जमाने में तौहीद (एकेश्वरवाद) के क़ायल थे, राजा को मालूम हुआ तो उसने बुलवा कर पूछा, अल्लाह ने उनको हिम्मत दी और उन्होंने खुल कर तौहीद का न सिर्फ़ यह कि इकरार किया बल्कि उसकी ओर बुलाया भी, राजा उनका दुश्मन हो गया लेकिन तुरन्त क़त्ल नहीं किया बल्कि मोहलत दी, तो उन्होंने आपस में विचार–विमर्श करके एक गुफा में जाकर शरण ली और अल्लाह पर भरोसा किया, अल्लाह ने उनको यहां गहरी नींद सुला दिया, तीन सौ नौ वर्ष वे वहां सोते रहे, अल्लाह ने अपनी शक्ति से उनको हर प्रकार से सुरक्षित रखा, धूप उनके दाएं–बाएं हो कर गुज़र जाती ताकि उनको तकलीफ़ न हो और आवश्यकता अनुसार गर्मी भी मिलती रहे। अल्लाह ने उनकी व्यवस्था ऐसी रखी कि वे करवट भी लेते रहे, देखने से महसूस होता कि जाग रहे हैं और एक कुत्ता गुफा के मुँह पर आकर बैठ गया कि देखने वाले को भय हो और कोई उनको परेशान न कर सके, पूरा राज्य उनके विरोध पर उतर आया तो अल्लाह ने अपने पास से उनकी सुरक्षा का प्रबंध किया इसलिए कि वे बहुत ही साहसी ईमान वाले नवजवान थे।

❖❖❖

Scanned with OKEN Scanner

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

बन्दे की सोच और गुमान के मुताबिक अल्लाह का फैसलाः-

दुआ कुबूल होने का समयः—

हजरत अबू उमामा रजि. से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 से लोगों ने कहाः कौन सी दुआ सबसे ज्यादा सुनी जाती है? आप सल्ल0 ने फरमाया— रात के आखिरी हिस्से में और हर फर्ज नमाज़ के बाद। (तिर्मीजी)

जामे दुआएंः—

(ऐसी दुआएं जो संक्षिप्त हों और उनके अन्दर सब चीजें आ गई हों)

हज़रत आइशा रजि. से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 जामे दुआओं को पसन्द फरमाते थे और उसके अलावा को छोड़ देते थे। (अबू दाऊद)

ह़जरत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 की अधिकतर दुआ यही होती थी, ''अल्लाहुम्म रब्बना आतिना फिदुनिया ह स नः व फिल आखिरति ह स नः व किना अजाबन्नार (ऐ अल्लाह! हमको दुनिया और आखिरत, दोनों जगहों की भलाई नसीब फरमा और दोजख़ की आग से बचा)।

(बुखारी व मुस्लिम)

मुसीबत के वक्त की दुआः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 दुखः और मुसीबत के वक्त यह कहते थे। ''ला इलाह इल्लल्लाहुल अजीमुल हलीमु ला इलाह इल्लल्लाहु रब्बुल अर्शिल अजीमि, ला इलाह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति वलअर्जि व रब्बुल अर्शिल करीम। (बहुत ही बड़ाई वाला और युक्ति वाला अल्लाह के सिवा कोई माबूद (उपास्य) नहीं है, बड़े अर्श के मालिक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, जमीन व आसमान और इज़्ज़त वाले अर्श के मालिक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है। (बुखारी व मुस्लिम)

दुआ और इस्तिआजः—

(ऐसी दुआएं जिनके द्वारा अल्लाह से पनाह और शरण की प्रार्थना की जाए)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 अधिकतर यह दुआ मांगते थे, ''अल्ला हुम्म इन्नी अऊजु बि क मिनल् अ़जज़ि वल कसलि वल जुब्नि वल हरमि वल बुख्लि, व अऊजु बि क मिन अजाबिल कब्र व अऊजु बि क मिन् फित्नतिल् महया वल् ममाति''। (ऐ अल्लाह! मैं कमज़ोरी से, सुस्ती से, बुजदिली से, बुढ़ापे और बखीली से, कब्र के अजाब से, और ज़िन्दगी और मौत के फित्ने (आजमाइश) से पनाह मांगता हूँ)। (मुस्लिम)

ह़जरत जैद बिन अरकम रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 दुआ किया करते थे ''अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बि क मिनल् अ़जजि़ वल कसलि, वल जुब्नि, वल बुख्लि वल हरमि व अजाबिल् कब्र, अल्लाहुम्म आति नफसी तक्वाहा व जक्काहा, अंत खैरु मन जक्काहा, अंत वलिययुहा व मौलाहा, अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बि क मिन इल्मिन् ला यन्फ व मिन कल्बिन् ला ख्शअ़ व मिन् नफसिन ला तश्बअ़ व मिन् दअ़वतिन् ला युस्तजाबु लहा'' (ऐ मेरे अल्लाह! मैं तेरी पनाह (शरण) लेता हूँ कम हिम्मती से, सुस्ती, काहिली और बुजदिली से, बखीली और

शेष पृष्ठ ....17....पर

Scanned with OKEN Scanner

सम्पादकीय

दुनिया के बुत कदों में पहला वह घर खुदा का

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

दुनिया में अल्लाह की इबादत के लिए सबसे पहले जिस घर का निर्माण हुआ वह मक्का मुअ़ज़्ज़मा में "काबा शरीफ" है उसको बैतुल्लाह भी कहा जाता है, कुरआन में इसका वर्णन स्पष्ट शब्दों में किया गया है।

अनुवादः– "सबसे पहला घर जो लोगों के इबादत करने के लिए निर्धारित किया गया वही है जो मक्का में है, पावन है और सारे संसारों के लिए मार्गदर्शक है"।

(सूरः आले इमरान–96)

कुरआन द्वारा हमें दो वास्तविकताओं की सूचना दी गई पहली सूचना यह है कि इन्सान और जिन्नात केवल अल्लाह की इबादत करेंगे, अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की इबादत नहीं करेंगे। दूसरी सूचना कुरआन द्वारा यह है कि धरती पर अल्लाह की इबादत के लिए जिस घर का निर्माण सबसे पहले हुआ वह मक्के में काबा है। इसकी व्याख्या यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत आदम और हज़रत हव्वा अलैहिमुस्सलाम के दुनिया में आने के बाद अल्लाह तआला ने जिब्रईल अमीन द्वारा उनको यह आदेश दिया कि वह बैतुल्लाह (काबा) बनाएं उन हज़रात ने आदेश का पालन किया और फिर उनको आदेश दिया गया कि वह उसका तवाफ़ करें। बाज़ रिवायतों में है कि आदम अलैहिस्सलाम द्वारा "काबे" का यह निर्माण नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने तक बाक़ी था, तूफ़ाने नूह में यह निर्माण ढह गया और उसके निशान मिट गये, उसके बाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इन्हीं बुनियादों पर दूसरा निर्माण किया, फिर एक मरतबा किसी घटना में यह निर्माण गिर गया तो क़बीला जुरहम के लोगों ने इसका निर्माण किया, उसके बाद फिर गिरा तो अमालक़ा की क़ौम ने बनाया, वह निर्माण गिरा तो कुरैश ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रारम्भिक काल में उसे बनाया, इस ऐतिहासिक अवसर पर "काबे" के निर्माण में नबी करीम सल्ल0 भी शरीक हुए, और "हज्रे अस्वद" को अपने मुबारक हाथों से स्थापित किया जिसकी वजह से अरबों की एक बड़ी लड़ाई टल गई। यह इतिहास की प्रसिद्ध घटना है, कुरैश का यह निर्माण इब्राहीमी निर्माण से अलग था बैतुल्लाह का एक भाग जिसे "हतीम" कहा जाता है बजट की कमी की वजह से अलग कर दिया गया, लेकिन आप सल्ल0 ने फरमाया "हतीम" बैतुल्लाह का हिस्सा है इसलिए ख़ान–ए–काबा के तवाफ़ में "हतीम" भी शामिल है।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 से फ़रमाया कि मेरा दिल चाहता है कि वर्तमान निर्माण को गिरा करके उसको बिलकुल इब्राहीमी बुनियादों के अनुसार कर दूँ, लेकिन नव मुस्लिम अनभिज्ञ मुसलमानों में भ्राँति पैदा होने का ख़तरा है, इसलिए इस समय इसको छोड़ता हूँ, इस इरशाद के बाद अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बहुत थोड़े दिन दुनिया में रहे।

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 के भाँजे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि0 नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इरशाद सुने हुए थे, ख़ुलफ़ाए राशिदीन के बाद जिस समय मक्का मुकर्रमा पर उनकी हुकूमत हुई तो उन्होंने बैतुल्लाह को इरशादे नबवी के अनुसार इब्राहीमी बुनियादों पर बना दिया, मगर अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की हुकूमत मक्के मुअ़ज़्ज़मा पर बहुत थोड़े दिन रही थी, "ज़ालिमुल उम्मा" हज्जाज बिन

Scanned with OKEN Scanner

यूसुफ ने मक्के पर फ़ौज कशी करके उनको शहीद कर दिया और हुकूमत पर कब्ज़ा करके इसको गवारा न किया कि अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि0 का यह कारनामा रहती दुनिया तक उनकी तारीफ़ और प्रशंसा का आधार बना रहे इसलिए लोगों में यह मशहूर किया कि अब्दुल्लाह बिन जुबैर का यह काम ग़लत था, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसको जिस हालत पर छोड़ा था हमें उसी हालत पर इसको रखना चाहिए, इस बहाने से बैतुल्लाह को फिर मुनहदिम करके उसी तरह की तामीर बना दी जो जाहिलियत के ज़माने में कुरैश ने बनाई थी, हज्जाह बिन युसूफ़ के बाद आने वाले कुछ मुस्लिम बादशाहों ने फिर, इरादा किया कि बैतुल्लाह को पुनः हदीसे रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसार बना दें, लेकिन उस ज़माने के इमाम हज़रत इमाम मालिक बिन अनस रज़ि0 ने यह फ़तवा दिया कि अब बार बार बैतुल्लाह को मुनहदिम करना और बनाना आगे आने वाले बादशाहों के लिए बैतुल्लाह को एक खिलौना बना देगा। हर आने वाला बादशाह अपनी नाम वरी के लिए यही काम करेगा, इसलिए अब जिस हालत में भी है उस हालत में छोड़ देना मुनासिब है, तमाम उम्मत ने इसको स्वीकार किया, इसी वजह से आज तक वही हज्जाज बिन यूसुफ़ ही की तामीर बाक़ी है। हाँ टूट फूट देख भाल का सिलसिला सदैव चलता रहा।

इन रिवायात से यह मालूम हुआ कि "काबा" दुनिया का सबसे पहला घर और पहला "इबादत ख़ाना" है, कुरआन करीम में जहां यह ज़िक्र है कि "काबा" का निर्माण अल्लाह के आदेश से हज़रत इब्राहीम और इस्माईल अलैहिस्सलाम ने किया वहीं इसके संकेत भी मौजूद हैं कि उन बुज़ुरगों ने उसका प्रारंभिक निर्माण नहीं किया बल्कि पिछली बुनियादों पर उसी के अनुसार निर्माण किया और "काबे" की वास्तविक बुनियाद पहले ही से थी। सूरः हज की आयत में हैः– "और जब हमने इब्राहीम को (अल्लाह के) घर का स्थान बता दिया" इस आयत से यह बात मालूम होती है कि बैतुल्लाह की जगह पहले ही से नियुक्त थी।

कुछ रिवायतों में है कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बैतुल्लाह की तामीर का हुक्म दिया गया तो फ़रिश्ते द्वारा बैतुल्लाह की भूतपूर्व बुनियादों को चिन्हित किया गया जो रेत के टीलों में दबी हुई थी।

सारांश यह कि कतिथ आयत से "काबा" की एक श्रेष्ठता यह साबित हुई कि वह दुनिया का सबसे पहला घर या पहला इबादत ख़ाना है। बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में है कि हज़रत अबूज़र रज़ि0 ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया कि दुनिया की सबसे पहली मस्जिद कौन सी है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मस्जिदे हराम, उन्होंने अर्ज़ किया इस के बाद कौन सी मस्जिद है, आप सल्ल0 ने फ़रमाया मस्जिद बैतुल मुक़द्दस है, फिर प्रश्न किया कि इन दोनों मस्जिदों के निर्माण में कितने समय का अन्तर है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया चालीस वर्ष का अन्तर है।

उपरोक्त व्याख्या से भली भांति यह बात स्पष्ट हो गई कि दुनिया की सबसे पहली मस्जिद मस्जिदे हराम है जो बहुत महत्वपूर्ण और बरकत वाली मस्जिद है, इस मस्जिद में एक नमाज़ पढ़ने का सवाब एक लाख नमाज़ पढ़ने के बराबर है, पूर्ण इस्लामी जगत नमाज़ के समय अपना चेहरा इसी ऐतिहासिक मस्जिद की ओर करता है और दिल व ज़बान से अल्लाह के इस घर के साथ अपनी अक़ीदत और मुहब्बत का इज़हार करता है। इसी को शायर ने यूँ कहा हैः–

दुनिया के बुत कदों में
पहला वो घर ख़ुदा का।
हम उसके पासबाँ हैं
वह पासबाँ हमारा।।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

अबुल फजल और दीन–ए इलाही:–

अकबर के ज़माने में भी सच्चाई और नेकी वालों का जो समूह था वह उन दोनों से अलग था और चूँकि बादशाह के दरबार पर इन्हीं दोनों अभागे समूहों का दबदबा था इसलिए उनको तरह–तरह के दुख और परेशानियों का सामना करना पड़ा। हज़रत शेख जमालुद्दीन भी उन्हीं लोगों में थे। मुल्ला मुबारक के खानदान अर्थात अबुल फजल और फैजी ने मौलवियों का ज़ोर तोड़ने के लिए युक्ति की। 987 हि0 में अपने पिता मुल्ला मुबारक से एक माँग–पत्र तैयार कराया, जिसका विषय यह था कि बादशाह ज़माने के ख़लीफ़ा और ज़माने के इमाम हैं जिनका आज्ञापालन अनिवार्य है और उसको अधिकार प्राप्त है कि विवादित समस्याओं में आवश्यकतानुसार इज्तेहाद करे और उसके इज्तेहाद का मानना अनिवार्य है। मौलिक रूप से यह बात तो ठीक थी, लेकिन वास्तव में समय का ख़लीफ़ा बुद्धिमान और विवेकशील लोगों की शूरा को हर जमाने और युग में इज्तेहाद करने का अधिकार प्राप्त है। इसी की रोकथाम ने इस्लाम के इतिहास की सभी कठिनाइयों की बुनियाद डाली लेकिन परेशानी यह थी कि अकबर धर्म से पूरी तरह अपरिचित था। उसके परामर्शदाताओं का रंग दूसरा था। परिणाम यह निकलता और निकला कि बादशाह की इमामत और इज्तेहाद उन्मुक्त और उन्मुक्तता और अनिवश्वरवाद का एक मजबूत साधन बन जाता और अन्ततः पैगम्बर। इसलिए आवश्यक था कि सच्चे उलमा को इस माँग–पत्र को स्वीकार करने में बहुत संकोच हुआ।

लेकिन सरकार के दबाव के आगे किसकी चलती है। बुरे उलमा ने अपने बुरे कर्मों से अपना प्रभाव पहले ही खो दिया था। विवश होकर सबको दस्तख़्त करना पड़े, सबसे पहले उन्हीं गर्दन खीचने वालों ने सिर झुकाया जिनके गर्दन की नस सबसे अधिक मोटी थी और जिनकी फसद (नस) खोलने के लिए यह नश्तर तेज हुआ था अर्थात मुल्ला अब्दुल नबी और मख्दूमुल मुल्क ने फिर काजीउल कुजात (मुख्य न्यायधीश) जलालुद्दीन मुल्तानी और शेख अब्दुल नबी मुफ़्ती आदि लोगों ने बिना किसी हीला बहाना के अपनी–अपनी मोहरें लगा दीं और दरबार के उलमा में किसी को इंकार और संकोच की हिम्मत न हुई।

अल्लाह, अल्लाह। ज़माने की कैसी क्रान्ति है, यह वही मोहरें हैं जो कभी सच्चे उलमा का इंकार करने और उनकी गुमराही के फतवों पर लगायी जाती थीं और उनके कत्ल और उनको पदच्युक्त करने के फरमानों का दामन दागदार करती थीं। आज एक अनपढ़ नौजवान की इमामत और इज्तेहाद की पुष्टि कर रही हैं ताकि यह प्रमाणित इमामत कल को स्वयं उन्हीं के आगे आए और अपने पहले ही झोके में उनकी शेखुल इस्लामी और धार्मिक सत्ता का चिराग गुल कर दे:

ये लपटें न हों कत्ल इंसाफ ये है
कि हम खुद बद आमोज कातिल हुए हैं

Scanned with OKEN Scanner

अफसोस है कि हर ज़माने और हर युग में जितनी बर्बादियाँ हुई, बुरे उलमा के हाथों हुई। समय और ज़माने की शिकायत बेकार है।

सच यह है कि अकबर के जमाने के तमाम फितने फसाद के मूल ज़िम्मेदार यही उलमा जो दुनिया के बन्दे हैं। न कि अबुल फजल और फैजी। हज़रत शेख अहमद सरहिन्दी (रह0) इस ज़माने के बारे में अपने पत्रों में बार–बार लिखते हैंः–

अनुवादः– ''यही शैतान की पार्टी हैं और जान लो कि निस्सन्देह शैतान की पार्टी ही घाटे में रहने वाली है।'' अकबर ने सभी धर्म वालों का यह हाल देखा तो सिरे से धर्म ही को छोड़ देना चाहा। स्वयं अबुल फजल और फैजी को भी इन्हीं लोगों ने अपनी इच्छा की पूजा और अत्याचार और उत्पीड़न के नमूने दिखाकर इस मार्ग पर आने का निमन्त्रण दिया था जिसके असन्तुलन देख–देखकर वह स्वयं दुखी होते होंगे कि उद्देश्य क्या था और क्या से क्या हो गया। उन्होंने बुरे उलमा के धोख़े और उनके मन्दिर का बुत तोड़ने के लिए एक दूसरा बुत तैयार किया जिसका नाम अकबर था। लेकिन आगे चलकर स्वयं उसी बुत की पूजा होने लगी''।

मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) ने अपनी प्रसिद्ध किताब तारीख़ दावत व अजीमत खण्ड 4 में हज़रत मुजद्दिद अल्फ्सानी अर्थात शेख अहमद सरहिन्दी की उपलब्धियों के उल्लेख के सम्बन्ध में दीन–ए–इलाही का बहुत विवेकपूर्ण और आलोचनात्मक विश्लेषण किया है। वह लिखते हैं कि दीन–ए–इलाही में तौहीद (एकत्ववाद) की बजाए (सूरज की पूजा) स्पष्ट शिर्क, नक्षत्रों की पूजा, गैब पर ईमान के बजाए आवागमन का विश्वास था और यह धर्म आग की जंजीर बनाकर उस समय के इस्लाम के गले में डाल दिया गया था।

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

Scanned with OKEN Scanner

पिछले अंक से आगे

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

बेईमानी व चोरी:-

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है:—

अनुवादः— "तुम्हारे लिए अल्लाह का इरशाद ये है कि तुम अमानतों को अमानत वालों तक पहुंचा दो।"

(अल—निसाः 58)

अगरचे ये हुक्म आम है और हर तरह की अमानत वो आर्थिक हो या व्यवहारिक हो, बाहर से इसका तअल्लुक हो या अन्दर से, उसको अदा करने का हुक्म है, खासतौर पर माल के सिलसिले में ये हुक्म है कि वो जिसकी मिल्कियत हो उसे अदा कर दिया जाए, और बिना मालिक की इज़ाज़त के उसमें से कुछ भी इस्तेमाल की इजाजत नहीं, अल्लाह तआला फरमाता है:—

अनुवादः— "ऐ ईमान वालो! आपस में एक दूसरे के मालों को ना हक मत खाओ सिवाए इसके कि आपस की सहमति से कोई व्यापार हो।"

(अल—निसाः 29)

दुनिया की अमन—शांति इसी से कायम है कि नियम व कानून निर्धारित हैं, अगर ये न हों तो, दुनिया नरक बन जाए जिसका जहाँ जी चाहे हाथ मारे, और जो चाहे करे, इस वक्त दुनिया में जो उथल पुथल का माहौल है, इसकी सब से बड़ी वजह बे ईमानी, और चोरी है, वो एक व्यक्ति के स्तर पर हो या बहुत से व्यक्तियों के स्तर पर या राष्ट्रीय स्तर पर, सारे झगड़े, लड़ाईयां इसी वजह से हैं, कोई भी अपनी सीमा में रहना नहीं चाहता।

अल्लाह के नबी ने यहाँ तक इरशाद फरमाया कि अगर कोई एक बालिश्त जमीन किसी की हड़प करता है तो वो कल क़यामत में गले की सात हसली बना कर उसके के गले में डाली जाएगी।

(बुखारी शरीफः 2453)

किसी की मामूली चीज़ भी बिना इजाजत के लेना गुनाह बताया गया है।

(बैहकीः 11877)

ये चोरी व बेईमानी खुल कर भी हो रही है और छुप छुपा कर भी, इसके नतीजे में दिलों की सख़्ती बढती जाती है, और फिर अच्छी बात कुबूल करने की सलाहियत ही धीरे धीरे ख़त्म हो जाती है, और आदमी ढिटाई पर उतर आता है, धोखा देने को फख्र समझा जाने लगता है, जबकि इरशादे नबवी है:—

अनुवादः— "जिसने हम मुसलमानों को धोखा दिया वो हम में से नहीं।"

(मुस्लिम शरीफः 294)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस सिलसिले में बड़ी बारीकियाँ स्पष्ट की हैं, एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गुज़र बाज़ार से हुआ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गल्ले का ढेर पड़ा हुआ देखा, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हाथ डाला तो मालूम हुआ कि वो अन्दर से भीगा हुआ है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि:— ये क्या है? गल्ला वाले ने कहा कि रात बारिश से भीग गया था, ऊपर का सूख गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:—

नीचे का ऊपर कर देना चाहिए, ताकि लोग देख लें, जो धोखा दे वो मुझ से नहीं।

(मुस्लिम शरीफः 295)

किसी भी तरीके पर धोखा दे कर या ताक़त के ज़ोर पर किसी का माल ले लेना सख्त गुनाह है, ऐसे गुनाहों में से है जिस का सम्बन्ध हुकूकुल इबाद (बन्दों के हक) से है बिना अदा किये या मआफ कराय मआफ

Scanned with OKEN Scanner

नहीं होता, और इसका नतीजा बड़ा खतरनाक होता है, एक हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहबा को ख़िताब कर के फरमायाः–

अनुवादः– "जानते हो कंगाल कौन है, सहाबा ने कहा– कंगाल वो है जिसके पास न रूपया पैसा हो, न सामान हो, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत में कंगाल वो है जो क़यामत के दिन नमाज़, रोजा, ज़कात के साथ आए, लेकिन इस हाल में आये कि इसको गाली दे रखी है, उस पर आरोप लगा रखा है, इसका माल खाया है, उसका खून बहाया है, इसको मारा है, तो उसकी नेकियाँ उन लोगों को दे दी जाएंगी, फिर जब हिसाब चुकाने से पहले नेकियाँ ख़त्म हो जाएंगी, तो उन लोगों के गुनाह उसके सर थोप दिए जाएंगे, फिर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा"।

(सहीह मुस्लिमः 6744)

कितने लोग हैं जो ना हक किसी की जमीन जायदाद, दूकान या माकन पर कब्जा कर लेते हैं, और मुकद्दमेबाजियाँ करते हैं, और गलत फैसलों से दूसरों की चीज के मालिक बन बैठते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः "अगर कोई ऐसी चीज लेता है तो वो आग का टुकड़ा लेता है, कुरआन मजीद में भी इसका जिक्र मौजूद है, इरशाद हैः–

अनुवादः– "और आपस में एक दूसरे का माल ना हक मत खाओ और न मुकद्दमा हाकिमों के पास ले जाओ ताकि लोगों के मालों का एक हिस्सा गुनाह के साथ तुम हड़प कर जाओ जब कि तुम जानते हो (कि उस में तुम्हारा हक नहीं है)

(अल–बकराः188)

और अगर कोई किसी कमज़ोर, यतीम, असहाय के साथ ऐसा करे तो उसके गुनाह की शिद्दत और बढ़ जाती है, इरशाद होता हैः–

अनुवादः– "बेशक जो लोग यतीमों का माल ना हक खाते हैं वो आग से अपना पेट भरते हैं और वो जल्द ही भड़कती हुई आग में जा पड़ेंगे।" (अल–निसाः 10)

❖❖❖

दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरख़ास्त

सुल्तानपुर के मशहूर आलिमे दीन और मेरे अजीज दोस्त मुफ़्ती अब्दुल रशीद साहब कासमी नाजिम जामिया उबै इब्ने कअ़ब ज्ञानीपुर की वालदा और बुजुर्ग आलिमे दीन मौलाना अब्दुल लतीफ साहब कासमी मरहूम पूर्व अमीरे जमात सुल्तानपुर की अहलिया का 15 मई 2026 को 98 वर्ष की उम्र में इंतेकाल हो गया। "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" उसी रोज असर बाद मुफ़्ती साहब ने जनाजे की नमाज़ अदा कराई और सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, अम्बेडकर नगर, जौनपुर, अमेठी के हज़ारों लोग उनके गाँव खजुरी पहुंचे और जनाजे में शामिल हुए।

मरहूमा बड़ी नेक, दीनदार, नमाज रोजे की पाबंद और अपने शौहर के दीनी व दावती कामों में पूरी जिंदगी बड़ी मददगार रहीं। अल्लाह उनकी मगफिरत फरमाए, दरजात बलंद फरमाए। मरहूमा के दो बेटे सईद अहमद, और मुफ़्ती अब्दुल रशीद साहब कासमी और एक बेटी और नाती पोतों का भरा–पूरा परिवार है अल्लाह सब को सब्रे जमील अता फरमाए आमीन।

हम अपने समस्त पाठकों से खुसूसी दुआ–ए–मग़फिरत की दरख़्वास्त करते हैं।

(उप सम्पादक)

Scanned with OKEN Scanner

बू बक्रो उमर उस्मानो अली

हज़रत मौलाना सैयद शाह नफीसुल हुसैनी रह०

असहाबे मुहम्मद हक के वली।
बू बक्रो उमर उस्मानो अली।।
याराने नबी में सब से जली।
बू बक्रो उमर उस्मानो अली।।
वह शमये हरम के परवाने।
वह खत्मे रुसुल के दीवाने।।
बू बक्रो उमर उस्मानो अली।
बू बक्रो उमर उस्मानो अली।
इस्लाम ने जिन को इज्जत दी।
इस्लाम को कुव्वत जिनसे मिली।।
ईमां की रिवायत जिन से चली।
बू बक्रो उमर उस्मानो अली।।
तरतीब खिलाफत भी है यही।
तरतीब फ़ज़ीलत भी है यही।।
लगती है यही तरतीब भली।
बू बक्रो उमर उस्मानो अली।।
इस नज्म की खुशबू फैले गी।
यह खुशबू हर सू फैलेगी।।
गूंजे गा यह नगमा गली गली।
बू बक्रो उमर उस्मानो अली।।
यह कत्बा हरम की ज़ीनत है।
यह लौहो क़लम की ज़ीनत है।।
लिख शाह नफीस अब इस को जली।
बू बक्रो उमर उस्मानो अली।।

❖❖❖

Scanned with OKEN Scanner

क्या है हज और कुरबानी

इं0 जावेद इक़बाल

हज नाम है अल्लाह की मुहब्बत में उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए दीवानों की तरह सब कुछ छोड़ कर दौड़ पड़ने का और अपनी सभी इच्छाओं को और मुहब्बतों को अल्लाह की मुहब्बत पर न्योछावर कर देने का। हज और कुर्बानी का अवसर हकीकत में एक बन्दे की अपने रब से मुहब्बत और इश्क की कहानी को याद करने का मौका है। वह बन्दा जिस ने अपने पालनहार की विशुद्ध भक्ति का नारा बुलंद करके दहकती आग में डाला जाना कुबूल किया था, वह बन्दा जिसने मालिक के हुक्म को मानकर बेआब व ग्याह मैदान (निर्जीव मरुस्थल) में अपनी बीवी और इकलौते नन्हे बच्चे को अकेला छोड़ देना कबूल किया था (उस समय उनके छोटे बेटे इसहाक का जन्म नहीं हुआ था)। और अंत में तो उस शख़्स ने अल्लाह की मुहब्बत में अपना सब कुछ कुरबान कर दिया, यानी बाप–बेटे ने खुशी खुशी अल्लाह के हुक्म पर जान ही कुरबान कर दी, बेटा भी बाप से पीछे न रहा और बाप को सलाह दी कि मेरे गले पर छुरी रखने से पहले आंखों पर पट्टी बांध लो ऐसा न हो कि मेरी मुहब्बत अल्लाह के हुक्म पर हावी हो जाय। आसमान व जमीन भी उस लम्हे कांप गए होंगे और धरती के चौपाए उसकी जगह अपनी जान कुरबान करने के लिए बेताब हो गए होंगे।

वह खुदा जिसने अपने सच्चे प्रेमी को आग में जलने से बचाया था, दहकती आग के गढ़े को फूलों की सेज बनाया था, वह दुनिया के सामने बे लौस मुहब्बत और विशुद्ध भक्ति का नमूना पेश करना चाहता था, उसे अपने महबूब बन्दे के इकलौते बेटे की जान लेना मक़सूद न था।

कौन था वह बन्दा, अल्लाह का आशिक दुनिया की मौजूदा प्रसिद्ध क़ौमों का बाप? वर्ष में कम से कम एक बार उसे याद करना हर शख़्स का फर्ज बनता है। उसी से इंसान को विशुद्ध भक्ति की प्रेरणा और सच्ची मुहब्बत की पहचान मिलती है। कैसी अजीब बात है कि आज का भटका हुआ नादान इंसान किसी अंजान वेलेंटाइन मुहब्बत के देवता की याद में हर साल प्रेम दिवस मना रहा है, मगर अपने महान पूर्वज की याद में आलमी पैमाने पर कोई जशन मनाने की ज़रूरत महसूस नहीं कर रहा, जबकि इतिहास और आसमानी किताबों की बुनियाद पर यह वाकया एक हकीकत है और खुदा का वह आशिक व फरमांबरदार बन्दा दुनिया की सभी मौजूदा कौमों का पूर्वज है।

आज से लगभग 4300 साल पहले इराक देश में पैदा होने वाला वह बच्चा जिस का नाम इब्राहीम था, बचपन ही से तौहीद का प्रचारक था, उसे मूर्ति पूजा से सख़्त नफ़रत थी। वह अपनी कौम को चांद सूरज वगैरह की पूजा में घिरा हुआ देखकर मन ही मन बहुत कुढ़ता रहता था उस का बाप न केवल मूर्ति पूजक था बल्कि वह मूर्तियां बनाने वाला एक कुशल कारीगर था। इब्राहीम अपने पिता को मूर्तियां बनाने और फिर अपनी ही बनाई मूर्तियों की पूजा करने के अनर्थ से आगाह किया करता था। वह अपनी क़ौम को भी तरह तरह से चांद सितारों की और मूर्तियों की पूजा के अनर्थ के विरुद्ध समझाया करता था। मगर कौन उसकी सुनने वाला था। इब्राहीम अपनी क़ौम के मुश्रिकाना अमल से इतना दुखी रहते थे कि एक दिन उन्होंने पूजा स्थल में जा कर सभी

Scanned with OKEN Scanner

मूर्तियों को तोड़ दिया, केवल एक सबसे बड़ी मूर्ति को रहने दिया। इसी जुर्म की सजा में उनको आग के गढ़े में डाला गया था मगर अल्लाह ताला ने आग को ठंडा गुलजार बना दिया और अपने खलील (दोस्त– हज़रत इब्राहीम की उपाधि) का बाल भी बांका न होने दिया। इसी वाकया के बाद हजरत इब्राहीम ने वतन छोड़ दिया। वह जहां भी जाते वहदानियत की तालीम देते, एक अल्लाह की इबादत का सबक पढ़ाते।

बुढ़ापे में अल्लाह ने उन्हें एक बेटा दिया जिसका नाम इस्माईल था। बुढ़ापे में एक इकलौता बेटा मगर उसका प्यार अल्लाह की मुहब्बत पर हावी न हो सका। अल्लाह ताला ने अपने ख़लील की परीक्षा लेने के लिए हुक्म दिया कि अपनी बीवी और बच्चे को मक्कह की पथरीली और निर्जीव धरती में अकेला छोड़ आओ। हज़रत इब्राहीम ने अल्लाह के हुक्म पर फौरन ही अमल किया, जब वह अपनी पत्नी हाजरा बी और बच्चे इस्माईल को अकेला छोड़ कर जाने लगे तो हाजरा बी ने पूछा क्या आप अल्लाह के हुक्म से हमें यहां अकेला छोड़ कर जा रहे हैं, यदि ऐसा है तो मुझे कोई परवाह नहीं, हमारा रब हमारी रक्षा करेगा। कुछ समय बाद जब बच्चे को प्यास लगी तो माँ तड़प उठी वहां पथरीली ज़मीन पर दूर दूर तक कहीं पानी न था, न वहां कोई मददगार था न आदमजाद था तब माँ ने घबराहट में सफा–मरवा की दोनों पहाड़ियों के बीच दौड़ दौड़ कर पानी की तलाश शुरू की मगर उन्हें कहीं पानी न मिला। थक हार कर जब बच्चे के पास वापस आईं तो देखा कि बच्चे के पैरों की रगड़ से पत्थरों के बीच पानी का स्रोत फूट पड़ा था। बच्चे की माँ हज़रत हाजरा पानी देख कर खुश हो गई अल्लाह का शुक्र अदा किया और तेजी से बहते पानी को जाय होने से बचाने के लिए कोशिश करने लगी मुँह से ज़म ज़म कहती जा रही थी (ज़म ज़म का अर्थ है थम थम) यह वही स्रोत है जो आज तक जारी है और ज़म ज़म के नाम से करोड़ों लोग अपने साथ अपने वतन ले जाते है मगर पानी में कोई कमी नहीं होती।

यह अल्लाह की देन है, उस का मोजिज़ा है वरना कहीं बच्चे के पैरों की रगड़ से पत्थर से पानी निकलता है। अल्लाह तआला को हाजरा बी की पहाड़ियों पर दौड़ भाग इतनी पसंद आई कि हमेशा के लिए हर हाजी को (चाहे मर्द हो या औरत) सफा–मरवा की पहाड़ियों के बीच दौड़ना अनिवार्य कर दिया, इतना ही नहीं बल्कि महिलाओं का सम्मान दोबाला कर दिया, वाह रे मेरे मौला, यादगार एक महिला के दौड़ने भागने की मगर महिलाओं को दौड़ने भागने की जगह सामान्य रूप से चल कर सई करने का आदेश दिया।

कुछ वर्ष बाद हज़रत इब्राहीम वापस आए और बेटे इस्माईल के साथ मिलकर काबे (अल्लाह के घर) का पुनर्निर्माण किया क्योंकि नूह नबी के समय आने वाले सैलाब में काबा क्षतिग्रस्त हो गया था। काबा की नई तामीर के बाद उन्होंने उसका तवाफ (परिक्रमा) किया। हजरत इब्राहीम के तवाफ की याद में अल्लाह ने हमेशा के लिए हर हाजी के लिए तवाफ करना अनिवार्य कर दिया। अल्लाह तआला हर एक के दिलों का हाल जानने वाला है, उसे अपने रसूल इब्राहीम के इश्क का हाल भी खूब मालूम था मगर दुनिया के सामने भी तो उसके इश्क का सबूत पेश करना था लिहाजा उस मालिक ने अपने खलील को हुक्म दिया कि अगर तुम मेरे सच्चे आशिक हो तो मेरे लिए अपने प्यारे बेटे को कुरबान करदो। यह आदेश सपने में दिया गया था और नबियों के सपने सच्चे होते हैं चुनांचे इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बेटे इस्माईल को अल्लाह का हुक्म सुनाया, बेटा भी तो आशिके

Scanned with OKEN Scanner

रब्बुल आलमीन का फरमांबरदार और भविष्य का नबी था फौरन बोल उठा, अब्बा जान अल्लाह के हुक्म पर कुरबान होने के लिए मैं तैयार हूं, इतना ही नहीं बाप को सलाह भी दी कि अब्बा जान छुरी चलाते समय आंखों पर पट्टी बांध लीजिएगा कहीं ऐसा न हो कि मेरी मुहब्बत आप के हाथों को छुरी चलाने से रोक दे। हज़रत इब्राहीम ने ऐसा ही किया और आंखों पर पट्टी बांध कर बेटे के गले पर छुरी चला दी। अल्लाह तआला को इस्माईल की जान लेना मकसूद न था, वह तो बस दुनिया के सामने अपने खलील के इश्के इलाही का प्रमाण पेश करना चाहता था लिहाजा फौरन फरिश्तों को हुक्म हुआ और बेटे इस्माईल की जगह पर एक दुंबा डाल दिया गया। हजरत इब्राहीम की इसी कुर्बानी की याद में दुनिया भर के ईमान वालों के लिए (जो इस का सामर्थ रखते हों) और हर हज करने वाले के लिए जानवर की कुर्बानी को अनिवार्य कर दिया।

इस तरह हज और कुर्बानी हज़रत इब्राहीम, उनकी पत्नी हाजरा बी और बेटे हजरत इस्माईल के त्याग, बलिदान और अल्लाह से बेपनाह इश्क के शआर (प्रसंगों) की यादगार का नाम है।

❖❖❖

पृष्ठ .....07... का शेष

कंजूसी से, आखिरी दर्जे के बुढ़ापे से और कब्र के अजाब से, ऐ मेरे अल्लाह! मेरे नफ़्स (अन्तरात्मा) को अपने डर से भर दे और उसको पाक व साफ कर दे, तू ही सबसे अच्छा पाक व साफ करने वाला है, तू ही उसका मददगार और मालिक है, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह (शरण) मांगता हूँ उस इल्म और ज्ञान से जो लाभ न दे, और ऐसे दिल से जिसके अन्दर तेरा डर न हो और ऐसे मन से जिसको सैरी और सन्तुष्टि न हो, और ऐसी दुआ (प्रार्थना) से जो कुबूल न हो। (मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 यह दुआ करते थे "अल्लाहुम्म ल क असलम्तु व बि क आमन्तु व अलै क तवक्कल्तु व इलै क अनब्तु व बि क खासम्तु व इलैक हाकम्तु फग़फिरली मा कद्दम्तु व मा अख्खरतु वमा अस्रतु वमा अअ़लन्तु, अन्तल मुकद्दिम व अन्तल मुअख़्ख़िर, ला इला ह इल्ला अन्त"। ऐ अल्लाह! मैंने तेरी फरमाँबरदारी की और तुझ पर ईमान लाया, तुझ पर मैने भरोसा किया, और तेरी तरफ पल्टा, और तेरी मदद के साथ मैं अपने विरोधियों से झगड़ा, और तेरी तरफ से अपना मुकदमा पेश किया, तू मेरे अगले–पिछले, खुले हुए और छुपे हुए, तमाम गुनाहों को माफ फरमा, तू ही आगे बढ़ाने वाला और तू ही पीछे हटाने वाला है, और तेरे सिवा कोई माबूद (उपास्य) नहीं है, न कोशिश है और न ताकत है मगर तेरी ही मदद से। (बुखारी व मुस्लिम)

दीन व दुनिया की भलाईः–

ह़जरत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 यह दुआ करते थे "अल्लाहुम्म अस्लिह ली दीनी अल्लजी हुव इस्मतु अमरी, व अस्लिह ली दुनयाय अल्लती फीहा मआशी व अस्लिह ली आखिरती अल्लती फीहा मआदी वजअलिल् हयात ज़्यादतल्ली फी कुल्लि खैर" वजअलिल् मौत राहत्ल्ली मिन कुल्लि शर"।

(ऐ अल्लाह! मेरे दीन (धर्म) को दुरुस्त कर दे जो कि मेरे बचाव का सामान है, और मेरी दुनिया दुरुस्त कर जिसमें कि मेरी ज़िन्दगी है, और मेरी आख़िरत को दुरुस्त कर क्योंकि यही मेरा ठिकाना है, और मेरी ज़िन्दगी हर भलाई के साथ बढ़ा दे, और मौत को मेरे लिए हर बुराई से आराम का सबब और कारण बना। (मुस्लिम)

❖❖❖

Scanned with OKEN Scanner

माँ-बाप की क़द्र करें!!!

सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी

अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को दुनिया में बहुत सी नेमतों से नवाज़ा है। उन नेमतों में एक बड़ी नेमत माँ–बाप होते हैं। इन्सान जब पैदा होता है तो बिल्कुल बेबस व लाचार होता है, न उसे कुछ खाने की तमीज़ होती है, न उठने–बैठने की, न चलने–फिरने की, न सोने–जागने की, न पहनने–ओढ़ने की। बातचीत करने के लिए उसके मुँह से सही अलफ़ाज़ तक नहीं निकलते हैं। न तकलीफ़ बताने के लिए कोई इशारे ही कर पाता है। उस वक़्त माँ–बाप ही उसके लिए सब कुछ होते हैं। और वही दोनों उसके तमाम मामलात को हल करते हैं। ग़रज़ कि बच्चे के बचपन का ज़माना उसके माँ–बाप की मेहरबानी और मुहब्बत पर ही टिका होता है।

फिर बच्चा थोड़ा बड़ा होता है तो माँ–बाप ही उसे खिलाते–पिलाते हैं, उसकी सफ़ाई–सुथराई करते हैं, उठना–बैठना, चलना–दौड़ना सिखाते हैं, उसे पहनाते–ओढ़ाते हैं, कहीं भी आना–जाना हो तो उसे साथ ले जाते और लाते हैं, मौसम की तबदीलियों के साथ उसकी हर मौसम में हिफ़ाज़त का सामान करते हैं, हर मुश्किल व परेशानी से उसे बचाते हैं, उसकी बेहतरीन तालीम व तरबियत का इन्तिज़ाम करते है। ग़रज़ कि उसकी ज़रूरत का हर सामान उसके लिए लाते हैं और अपनी ताक़त भर पूरी कोशिश करते हैं कि उसे किसी चीज़ की कमी का एहसास न हो। फिर बच्चा नौजवानी की उम्र तक पहुँचता है, इसके बाद बच्चा जब पूरी तरह जवान हो जाता है तो उसकी शादी–ब्याह और घर बसाने के सिलसिले में भी भरपूर मदद करते हैं। चुनांचे इतना वक़्त गुज़रते–गुज़रते उसके माँ–बाप अपनी उम्र को साल–ब–साल पीछे छोड़ते हुए बुढ़ापे की तरफ़ बढ़ते चले जाते हैं। फिर एक ज़माना ऐसा आता है कि माँ–बाप की ताक़त व कुव्वत धीरे–धीरे कम होने लगती है, आँखें कमज़ोर होने लगती हैं, हाथों–पैरों और आवाज़ में लचक पैदा होने लगती है, ताक़त जवाब देने लगती है, अक़्ल व समझ में धीरे–धीरे कमी महसूस होने लगती है और अपनी आख़िरी उम्र तक जा पहुँचते हैं।

उस वक़्त माँ–बाप का वही ज़माना पलटता है जो बचपन में बच्चे का शुरुआती ज़माना हुआ करता था, यानी अब उन्हें हर वक़्त औलाद के सहारे की ज़रूरत होती है, जो उनके तमाम मामलात को नर्मी व मेहरबानी के साथ हल करे जिस तरह माँ–बाप ने बचपन में औलाद के साथ किया था।

अब ऐसे वक़्त में औलाद को अपने बचपने और नासमझी के ज़माने को याद करना चाहिए कि हम किस हाल में थे! किस तरह थे! लेकिन अल्लाह ने हमें माँ–बाप की नेमत से नवाज़ा तो हमारे माँ–बाप ने हर–हर मौक़े पर हमारी मदद की और हमें सहारा दिया, हमारी ज़िन्दगी को पूरी तरह से मुकम्मल करने की हर मुमकिन कोशिश की। हमारे लिए किस–किस तरह की मुश्किलों और परेशानियों को बर्दाश्त करते हुए हमको किसी लायक़ बनाया। ख़ुद भूखे–प्यासे रह कर भी हमारे खाने–पीने का इन्तिज़ाम किया। ख़ुद के लिए कपड़ों की परवाह न करते हुए हमारे लिए अच्छे से अच्छे कपड़ों का इन्तिज़ाम

Scanned with OKEN Scanner

किया बल्कि हर–हर पल हर–हर लम्हा बिना किसी इनाम या क़ीमत की लालच के हमारा हर तरह से ख़याल रखा तो आज हमें उसी सुलूक को अपने माँ–बाप की तरफ़ पलटाना है जैसा सुलूक उन्होंने हमारे साथ बचपन में किया था।

बुढ़ापे का ज़माना एक ऐसा वक़्त होता है जब इन्सान ज़्यादा तर दूसरों की मदद पर टिका हुआ होता है, अपने काम ख़ुद से नहीं कर सकता, कभी–कभी तो उसके लिए उठना–बैठना, खाना–पीना, आना–जाना, चलना–फिरना, यहाँ तक कि पेशाब–पाखाने के लिए भी किसी सहारे की ज़रूरत होती है। और ऐसे वक़्त में उसके मिज़ाज में झुंझलाहट व चिड़चिड़ापन भी आ जाता है, इसी लिए अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में फ़रमाया है:–

अनुवादः– ***"अगर तुम्हारे सामने उन (माँ–बाप) में से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो उन से उफ़ तक न कहना और उन्हें न झिड़कना, और उन से ख़ूबसूरत, नर्म बात कहना।"***

अल्लाह तआला आलिमुल ग़ैब है, वह सब कुछ जानता है, वह इन्सान की हर उम्र की फ़ितरत को भी जानता है, उसे मालूम है कि जब एक इन्सान अपने बुढ़ापे की उम्र को पहुँचेगा तो उसका मिज़ाज व अन्दाज़ कैसा होगा?इसी लिए उसने औलाद को हुक्म दिया कि इस बुढ़ापे की हालत में अपने माँ–बाप की चिड़चिड़ाहट और झुंझलाहट के बावजूद तुम्हें सब्र व बर्दाश्त से काम लेना है और उनके सख़्त अन्दाज़ का जवाब भी नर्म अन्दाज़ से देना है। क्योंकि इन्सान बुढ़ापे की उम्र में ऐसा होता है जैसे अपने बचपन की तरफ़ लौट आया हो। और कभी–कभी वह बिल्कुल बच्चों जैसी हरकतें करता है, उसके मिज़ाज में ज़िद्दीपन और नासमझी लौटने लगती है, जिस से औलाद को परेशान नहीं होना है और इसे अल्लाह तआ़ला की एक नेमत समझ कर माँ–बाप की ख़िदमत व मदद करनी है और ख़ुदा के हुक्म को पूरा करते हुए अपनी दुनिया व आख़िरत दोनों की फ़िक्र करनी है। क्योंकि अगर हम ने अपने माँ–बाप के रवय्ये और उनके अन्दाज़ को बर्दाश्त करते हुए उनकी ख़ुशी हासिल कर ली तो अल्लाह तआला भी हम से राज़ी होगा और हमारे लिए दुनिया में हमारी अपनी औलाद के ज़रिये भी आसानियाँ पैदा करेगा और आख़िरत का अज्र तो बहरहाल हमारे हिस्से में आएगा ही इन्शाअल्लाह। इसी सिलसिले में एक हदीस में अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया है: "तुम अपने माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक करो, तुम्हारी औलाद तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करेगी"।

यक़ीनन माँ–बाप की ख़िदमत और उनकी फ़रमाँबरदारी के तुफ़ैल में अल्लाह तआला इन्सान को ऐसी–ऐसी नेमतों से नवाज़ता है जिनके बारे में उसने कभी सोचा भी न होगा। एक हदीस में है कि "जो शख़्स चाहता है कि उसकी उम्र में बढ़ोत्तरी हो और रिज़्क़ में बरकत हो तो उसे चाहिए कि अपने माँ–बाप के साथ अच्छा सुलूक करे।"

ख़ुसूसन आज के ज़माने में हम सब को अपने माँ–बाप का भरपूर ख़याल रखना चाहिए जिस दौर में दुनिया इस तरफ़ भाग रही है कि अपने बूढ़े माँ–बाप को बोझ समझते हुए ओल्ड–ऐज–होम में डाल कर ज़ाहिरी तौर पर इत्मिनान हासिल कर लिया जाए और अपनी ज़िन्दगी की राहें आसान कर ली जाएं। और इसी को अपने ख़याल में राहत व नेमत समझा जाता है। हालांकि मामला इसके उलट होता है कि औलाद

Scanned with OKEN Scanner

अपनी ज़िन्दगी में आने वाली उन मुश्किलों और परेशानियों को अपनी तरफ़ आने की दावत दे रही होती है जिन मुश्किलों और परेशानियों को माँ–बाप अपनी ज़िन्दगी के साए से एक ढाल बन कर रोके हुए होते हैं जिसका एहसास औलाद को नहीं होता, इस तरह के लोग दुनिया के साथ–साथ अपनी आख़िरत भी बर्बाद करने की तैयारी कर लेते हैं। अल्लाह तआला हम सबको इस बुरे सुलूक से बचाए।

अभी हाल ही की बात है हमारे वालिदे मुहतरम भी 18 अप्रैल 2026 को चंद महीनों की बीमारी के बाद इस फ़ानी दुनिया से आलमे आखिरत की तरफ़ सफ़र कर गये, ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'', उनके चलने जाने के बाद उनकी कमी का एहसास कुछ ज़्यादा ही शिद्दत से हुआ। उनके तुफ़ैल मिलने वाली दूसरी नेमतों में से एक बड़ी नेमत यह भी थी कि अल्लाह तआला ने उन्हीं के ज़रिये हमें मादरे इल्मी दारुल उलूम नदवतुल उलमा पहुँचाया और 13 साल तक यहाँ की तालीमी बहारों से मुस्तफ़ीद होने का मौक़ा मिला। यह तोहफ़ा वालिदे मुहतरम के ज़रिये मिलने वाले तोहफ़ों में क्या ही बेहतरीन तोहफ़ा था कि उन्होंने हमारे लिए दुनिया व आख़िरत में कामयाबी हासिल करने का बेहतरीन सामान मुहय्या करा दिया।

माँ–बाप के एहसानात का बदला तो पूरी ज़िन्दगी बेहतरीन सुलूक करके भी अदा नहीं किया जा सकता। ज़िन्दगी में तो औलाद उनके साथ अच्छा सुलूक करे ही करे लेकिन माँ–बाप के सफ़रे आख़िरत की तरफ़ चले जाने के बाद भी औलाद को मुस्तक़िल उनका ख़याल रखते हुए उनके लिए हमेशा मग़फ़िरत की दुआ करते रहना चाहिए, उनके बाद उनके मिलने वालों और दोस्तों के साथ भी अच्छा सुलूक करना चाहिए और हर–हर दुआ के वक़्त में उन्हें ज़रूर याद रखना चाहिए, उनके लिए ईसाले सवाब का सिलसिला भी बराबर जारी रखना चाहिए।

तीन साल पहले हमारी वालिदा मोहतरमा का इन्तिक़ाल और अब वालिदे मोहतरम की कमी हर–हर लम्हा महसूस होती है, अल–हम्दुलिल्लाह सुम्मा अल–हम्दु लिल्लाह! अल्लाह तआला ने ख़िदमत का भी ख़ूब मौक़ा दिया और रमज़ानुल मुबारक के पाक महीने में भी दिया, लिहाज़ा इस मौक़े से फ़ायदा उठाने की हर मुमकिन कोशिश भी की गई, लेकिन उनके जाने के बाद बस यही लगता है कि काश! कुछ दिन और... काश! कुछ दिन और... काश! कुछ दिन और... अल्लाह तआला उन दोनों की ज़िन्दगियों को और लंबी कर देता तो मज़ीद आख़िरत के लिए कुछ सामान हो जाता।

यह एहसास औलाद को अकसर बाद में कुछ ज़्यादा ही होता है कि यक़ीनन कमियाँ और कोताहियाँ ही रही होंगी जिनकी भरपाई हम किसी तरह कर सकते। अल्लाह तआला से दुआ है कि हम सबको माँ–बाप की क़द्र करने और उनकी ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। उनके सिलसिले में होने वाली कोताहियों को माफ़ फ़रमाए, हम सबके माँ–बाप की मग़फ़िरत फ़रमाए, उनके गुनाहों को नेकियों से बदल कर जन्नतुल फ़िरदौस में आला मक़ाम अता फ़रमाए। आमीन

◆◇◆

नोटः

हम सच्चा राही के समस्त पाठकों से अपने सहपाठी और सच्चा राही के शुभचिंतक सय्यद सुफ़यान अहमद नदवी लखनवी के वालदैन के लिए दुआ–ए–मग़फ़िरत की अपील करते हैं।

(उप सम्पादक)

Scanned with OKEN Scanner

मज़दूर वर्ग और इस्लाम धर्म

डॉ0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

इस्लाम धर्म केवल मजहब नहीं बल्कि एक जीवन पद्धति का भी नाम है जिसमें शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के कामों को तरजीह दी गयी है। हजरत मुहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय से पहले शारीरिक श्रम के रूप में पहले के पैगंबरों जैसे आदम अलै0 और हजरत इब्राहीम अलै0 का किसानी करना, हजरत हव्वा अलै0 का ऊन कातना, हजरत नूह अलै0 का कश्ती बनाना, हजरत दाऊद अलै0 का लोहारी का काम करना, इसके अलावा हजरत जुल्करनैन का लोहे की दीवार का निर्माण आदि शामिल हैं। इसी प्रकार मस्तिष्क अर्थात दिमाग़ी काम करने में हज़रत लुकमान की हिकमत मशहूर थी और वह दर्जी का भी काम करते थे, इसी तरह हज़रत तालूत कपड़े रंगते अर्थात रंगरेज थे। हज़रत इदरीस अलै0 भी कपड़े सीते थे तो वहीं हजरत यूसुफ अलै0 का मिस्र के बादशाह के खजांची के रूप में काम करना आदि शामिल हैं।

इस्लाम किसी काम को मेहनत व खूबसूरती के साथ पूरा करने को पसंद करता है, पवित्र कुरआन में पैगम्बर हजरत दाऊद अलै0 को संबोधित करके कहा गया है कि विस्तृत कवच बनाओ और कड़ियों को जोड़ने में अन्दाजे का ख्याल रखो और तुम सब के सब अच्छे काम करो, जो कुछ तुम करते हो उसको मैं देख रहा हूं।

इस्लाम में है कि छोटे से छोटा काम भी अगर जायज हो तो उसे करने से संकोच नहीं करना चाहिए। हजरत मुहम्मद सल्ल0 खुद बकरियां चराते थे। व्यापार के लिए यात्रा करते थे, इसी प्रकार घरेलू जीवन में अपने कपड़ों में खुद पेवंद लगाते थे और घर का काम स्वयं करते थे। इसी तरह हजरत मूसा अलै0 और शोएब अलै0 भी बकरियां चराते थे।

आज लोग प्रत्येक वर्ष मजदूर दिवस पर मजदूरों और श्रमिकों के अधिकारों को याद करते है लेकिन इस्लाम ने यह अधिकार आज से 14 सदी पहले ही दे दिया था और इस प्रकार इस्लाम ने काम के महत्व को बताया ताकि समाज में विकास को बढ़ावा और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सके तथा उसी समय हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने मजदूरों और दासों के शोषण को रोकने के लिए कानूनों की स्थापना की। इस सम्बन्ध में हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने केवल आदेश या नसीहत नहीं दिया बल्कि क्रियात्मक रूप उसे निभा कर दुनिया के सामने नजीर पेश की।

हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने कभी बादशाहों का तरीका नहीं अपनाया बल्कि उनके रंग–ढंग से नफरत की और हमेशा अपने को एक आम आदमी के रूप में प्रस्तुत किया,इसलिए वह फर्श पर बैठते थे और अपने सेवक जिन्होंने आपकी दस साल सेवा की अर्थात अनस बिन मालिक के साथ खाना खाते थे, उनके साथ नर्मी का व्यवहार करते बल्कि अपने बेटे की तरह मानते। वही हजरत अनस रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कभी भी उन्हें किसी बात के लिए नहीं डाँटा। जब भी मैंने

Scanned with OKEN Scanner

कुछ किया, तो उन्होंने मेरे तरीके पर कभी सवाल नहीं उठाया।

अंतिम स्नदेष्टा हजरत मुहम्मद सल्ल0 की शिक्षा में है कि अपने मातहत को अपना भाई समझो जिन पर अल्लाह ने तुम्हें अधिकार दिया है इसलिए यदि किसी के नियंत्रण में कोई अन्य व्यक्ति है तो उसे खाने के लिए वही खाना देना चाहिए जो खुद खाए,जो खुद पहने उसे भी वैसा ही पहनाए और उतना ही बोझ देना चाहिए जितना वो बर्दाश्त कर सके बल्कि उसके कामों में भी मदद करनी चाहिए उसी संदर्भ में हजरत मुहम्मद सल्ल0 का ये वाक्य तो दुनिया भर के मजदूरों की हिमायत का पहला चार्टर है कि ***"मजदूर की मजदूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दो"।***

जब हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने लोगों के बीच इस्लाम धर्म का निमंत्रण देना शुरू किया तो उस समय अरब में दास प्रथा जोरों पर थी, अरब में मेहनत–मजदूरी का काम सामान्यतः दास ही किया करते थे। अरब के व्यापारी दूर दराज के क्षेत्रों से लाए गए लोगों को खरीद कर जीवन भर के लिए अपना गुलाम बना लेते थे, उन गुलामों के साथ बहुत जुल्म किया जाता था, उन्हें मेहनत–मजदूरी के बदले रोटी और कपड़े दिए जाते थे मगर कठोर कार्य के बदले उन्हें भरपेट भोजन भी नहीं दिया जाता था।

दासों की ऐसी दयनीय स्थिति को देखते हुए इस्लाम ने गुलामों को आजादी देने पर उन्हें जन्नत की खुशखबरी सुनाई है। इस्लाम की पवित्र पुस्तकों में गुलामों के साथ अच्छा व्यवहार करने और उन्हें आजाद करने पर उभारा गया है और बताया गया है कि इस्लाम को मानने वाले अपनी बेशौहर औरतों, नेक दिल गुलामों व कनीजों का निकाह सही वक्त पर कर दें,ऐसा करने से अल्लाह उनपर रहमतें बरसाएगा।

इसी तरह इस्लाम धर्म में बताया गया है कि अगर तुम्हारा गुलाम आजाद होना चाहता है तो तुम उसे खुशी–खुशी आज़ाद कर दो और उनके हिस्से में जो भी माल आता है तुम उसे अता कर दो।

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के माध्यम से इस्लाम में बताया गया है कि इंसान को वही मिलता है जिस चीज के लिए वो प्रयास करता है। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अपने लोगों से कहा करते थे कि अल्लाह को वो बंदे पसंद आते हैं जो अपने परिवार का पेट पालते हैं अर्थात जो काम करते हैं और सबसे बेहतरीन खाना वो होता है जो आदमी मेहनत से कमा कर खाता है।

इस्लाम धर्म के इन सिद्धांतों की वजह से काफी बड़े बदलाव आए और मजदूरों को अपनी जायज मजदूरी और गुलामों को गुलामी से निजात मिली और स्वतंत्रता व न्याय की धारणा मजबूत हुई।

❖❖❖

अनुरोध

हम अपने पाठकों की दीनी मालूमात और धार्मिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए "कुरआन की शिक्षा" और "प्यारे नबी की प्यारी बातें" जैसे लेख निरंतर प्रकाशित करते हैं। उनका सम्मान हमारा और आपका कर्तव्य है। इसलिए जिन पन्नों पर ये आयतें और हदीसें लिखी हैं, उनका एहतिराम हमारी दीनी जिम्मेदारी है इसका ख़्याल रखें, इंशाअल्लाह हम सवाब के मुस्तहिक़ एवं पात्र होंगे।

(इदारा)

हज के बाद ज़िन्दगी कैसे गुज़ारें

जमाल अहमद नदवी
(उप सम्पादक)

हज और कुर्बानी इस्लाम की बहुत ही महत्वपूर्ण इबादतें हैं और दोनों ही इस्लामी कलेण्डर के आखरी महीने "जिलहिज्जा में अदा की जाती हैं। यह दोनों इबादतें हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह के इश्क़ और हजरत इस्माईल अलै0 की कुर्बानी की यादगार हैं, और अल्लाह के सामने पूर्ण समर्पण, बन्दगी के इज़हार और उसकी खुशनूदी व रजा को हासिल करने का अहम ज़रीया व साधन हैं, जिनका नसीबा जागा और जिन पर अल्लाह ने करम फरमाया और जिनको अपने घर तक आने का सामर्थ्य दिया, वह अल्लाह और उसके नबी के घर की ज़ियारत को गये, हर हाजी को यह आदेश है कि वह हज का सफर शुरु करने से लेकर वापस आने तक और आने के बाद भी अपने आप को रब का बंदा बनाने की भरपूर कोशिश करे और पूरे सफर में वह सिर्फ और सिर्फ अल्लाह की बड़ाई बयान करे और खूब खूब दुरूद व सलाम का नजराना पेश करे और खूब तौबा व इस्तिग़फार कर के अपने अल्लाह और रसूल को खुश व राजी करने की कोशिश करे और नाम व नमूद शोहरत, रिया और दिखावे से बिल्कुल दूर रहने का प्रयास करे, और अपनी अना, अपनी ख्वाहिश अपनी पसंद, नापसंद सब को तज दे तब जा कर इसको हज्जे मबरूर अर्थात मक़बूल हज की सआदत मिलती है और हज्जे मबरूर का बदला सिवाय जन्नत के और कुछ नहीं।

अब हाजियों की वापसी का सिलसिला भी शुरु हो चुका है और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "जिसने हज किया और उसने बेहयाई और फिस्क़ व फुजूर नहीं किया, वह ऐसे लौटता है जैसे आज ही उसकी माँ ने उसे जना हो।"

मालूम यह हुआ कि एक हाजी जब हज से लौटता है तो गुनाहों से धुल–धुला कर एक बच्चे की तरह हो जाता है, हज्जे मक़बूल के बाद उसके गुनाह धुल जाते हैं उसके दिल में ईमान का नूर पैदा हो जाता है और उसके हर काम से पाकीज़गी टपकने लगती है वह नेकी के सांचों में ढल जाता है। इसी लिए अल्लाह के रसूल सल्ल0 का फरमान है कि हाजी जब लौट कर आये तो उससे जा कर मिलो उसका इस्तेक़बाल करो, उससे मुसाफ़ा करो और उससे अपने बखशिश की दुआ कराओ और उसके लिए भी दुआ करो, क्योंकि हज से पहले वह जर्रा था तो हज के बाद सितारा बन कर लौटा है।

अब हर हाजी की जिम्मेदारी है कि अल्लाह ने जो उसे अपने और अपने हबीब अहमदे मुजतबा सरवरे कौनेन के दर पर बुला कर सम्मानित किया है तो उसकी लाज रखे और हर हर कदम फूँक–फूँक कर रखे और अल्लाह की वहदानियत और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि की मुहब्बत का वैसे ही गुनगान करे जैसे वह पूरे सफर में करता रहा है, वह अपने आप को अल्लाह व रसूल की मुहब्बत में लीन रखे, पहले से ज़्यादा नमाज़ों, दुआओं, तिलावत, जिक्र और दुरुद व इस्तिग़फ़ार का एहतिमाम रखे, रिज़्के हलाल कमाने और हराम से बचने की कोशिश करे और अपने आपको हर क़िस्म के रुसूम व रिवाज, बिदआत व खुराफात से दूर रखे, रिश्तों को निभाये और कोई ऐसा काम न करे जिससे इस्लाम और मुसलमान बदनाम हों या स्वयं उसकी इज्जत पर धब्बा आये, उसे समाज के लिए एक नमूना बन कर रहना चाहिए ताकि लोग उसे देख कर अपनी ज़िन्दगी में तबदीली लायें और कहें कि वास्तव में यह हाजी कहे जाने का मुस्तहिक है।

❖❖❖

Scanned with OKEN Scanner

रोज़ी रोटी और मानसिक तनाव

अनवर हुसैन

आज के दौर में बहुत से लोग रिज़्क की तंगी से परेशान हैं। नौकरी नहीं मिल रही, कारोबार नहीं चल रहा, महंगाई बढ़ रही है, और घर का खर्च मुश्किल से पूरा हो रहा है। ऐसे हालात में इंसान मायूस हो जाता है, और कई बार ऐसे रास्ते चुन लेता है जो दीनी उसूलों से हटकर होते हैं। लेकिन अगर हम दीनी सोच को अपनाएं, तो तंगी के दौर में भी हमें रौशनी मिल सकती है।

कुरआन में बार–बार सब्र की ताकीद की गई है। अल्लाह फरमाता है: ''बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।'' तंगी के वक्त सब्र करना ईमान की निशानी है। जो कुछ मिला है, उसका शुक्र अदा करना चाहिए। अल्लाह फरमाता है। '' अगर तुम शुक्र अदा करोगे, तो मैं और ज़्यादा दूँगा।'' अल्लाह पर भरोसा रखना सबसे बड़ा सहारा है। जब इंसान भरोसा करता है, तो अल्लाह उसके लिए ऐसे रास्ते खोलता है जिनका वह अंदाजा भी नहीं लगा सकता। अल्लाह चाहे जिसकी रोजी कुशादा कर देता है जिसकी चाहे तंग कर देता है।

यह सब दीनी बातें हमें ताकत और हिम्मत देती हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहें। हमें सुकून से रोजी रोटी के लिए रास्ता ढूंढना चाहिए और परेशान कतई न होना चाहिए। पूरे ऐतमाद और तैयारी के साथ हमें रोजी के लिए काम शुरू करना चाहिए, इसके लिए कोशिश करते रहना चाहिए। और हाँ रोजी–रोटी के लिए कोई काम छोटा–बड़ा नहीं होता, हर काम की अच्छाइयाँ और बुराइयाँ होती हैं, अच्छाइयों पर नज़र रखें और बुराइयों या कमियों को हावी न होने दें। लोग क्या कहेंगे यह मत सोचिये, अल्लाह का नाम लेकर कोई भी छोटा काम शुरू करें, ईमानदारी और मेहनत इसी काम को बड़ा कर देगी। खाली बैठना बेहद खतरनाक है। अगर पहले कोई गलती हो गई है तो उसे भूल जाइये, उससे जो तजुर्बा मिला है उसका फायदा उठाइए और नए सिरे से अल्लाह का नाम लेकर जुट जाइये।

इसलिए जिस काम को आप करते हो, जिस काम से आपका घर चलता है, जिस काम से आपका पेट पलता है, जब तक आप उस काम की इज़्ज़त करते रहेंगे और अल्लाह का शुक्र अदा करते रहेंगे बरकत होती रहेगी। जिस दिन अपने काम पर बैठकर कहने लग जायेंगे कि आजकल इस काम में कुछ नहीं रखा है उसी दिन से वह काम आपसे रूठ जायेगा और उसमें घाटा शुरू हो जायेगा अर्थात बरकत उठ जायेगी। इसी तरह जो नौकरी आप कर रहे हैं, यह कहते रहें कि अल्हम्दुलिल्लाह बहुत बढ़िया नौकरी है तो कम तनख़्वाह में भी बरकत हो सकती है वरना लाखों की नौकरी को कोसते रहोगे तो कभी बरकत नहीं होगी।

इसका मतलब यह भी नहीं कि अपने कारोबार को बढाने, अच्छा कारोबार या अच्छी नौकरी के लिए कोशिश नहीं करनी चाहिए। दिल लगा कर कोशिश करियेगा तो अल्लाह भी साथ देगा और पिछली नौकरी या काम में आपने जो दिल लगाकर सीखा है वह सब इस नए काम को हासिल करने में आपके काम आएगा।

शेष पृष्ठ ..36..पर

Scanned with OKEN Scanner

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः ''कुरआन मजीद'' किस हस्ती का कलाम है?

उत्तरः ''कुरआन मजीद'' क़ायनात के ख़ालिक़ अल्लाह का कलाम है।

प्रश्नः कुरआन मजीद की तालीमात किन लोगों के लिए हैं?

उत्तरः कुरआन मजीद की तालीमात दुनिया के सारे लोगों के लिए हैं।

प्रश्नः कुरआन मजीद के सबसे पहले हाफिज़ का नाम बताइए?

उत्तरः कुरआन मजीद के सबसे पहले हाफ़िज़ हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) हैं।

प्रश्नः कुरआन मजीद कितनी मुद्दत में नाज़िल हुआ?

उत्तरः 22 साल, 5 महीने, 14 दिन में नाज़िल हुआ।

प्रश्नः नबी (सल्ल0) के पास वह्ही कौन लेकर आता था?

उत्तरः अल्लाह के फरिश्ते हज़रत जिबरील (अलैहिस्सलाम)।

प्रश्नः कुरआन मजीद का सबसे बड़ा मुफस्सिर (कुरआन का टीकाकार) किस सहाबी को बताया जाता है?

उत्तरः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि0) को, जो नबी (सल्ल0) के चचेरे भाई थे।

प्रश्नः नबी (सल्ल0) पर कुरआन मजीद की सबसे पहली वह्य कहाँ नाज़िल हुई?

उत्तरः शहर मक्का से करीब एक पहाड़ की गुफा में, जिसको ''गारे–हिरा'' कहते हैं।

प्रश्नः कुरआन मजीद के सबसे पहले कातिब (लिखने वाले) कौन थे?

उत्तरः हज़रत ख़ालिद–बिन–सईद (रज़ि0)।

प्रश्नः नबी (सल्ल0) पर आखिरी वही कौन सी नाज़िल हुई?

उत्तरः सूरा बकरा की आयत नम्बर– 281 और कुछ रिवायतों के मुताबिक सूरा– मायदा की आयत नम्बर– 3

जो हज्जतुल–वदाअ़ के मौके पर नाजिल हुई।

प्रश्नः कुरआन मजीद की मौजूदा तरतीब किस तरह अमल में आई?

उत्तरः ये तरतीब खुद नबी (सल्ल0) ने अल्लाह तआला की मर्ज़ी के मुताबिक़ क़ायम की थी।

प्रश्नः कुरआन मजीद की तरतीब और हिफाजत का नबी (सल्ल0) ने क्या इन्तिजाम फरमाया था?

उत्तरः कुरआन मजीद अल्लाह के रसूल (सल्ल0) पर नाज़िल होता था। इसे जमा करने के मकसद से आप (सल्ल0) ने बहुत से कातिबों की खिद्मात हासिल कर रखी थीं, जो साथ–साथ आयतों को लिखते जाते थे। इन आयतों को हाफिज लोग ज़बानी याद भी कर लेते थे। इस तरह कुरआन मजीद लिखकर और ज़बानी हिफ़्ज (याद) करके दोनों तरह महफूज हो गया।

प्रश्नः कुरआन मजीद के उतरने के वक्त क्या दूसरी आसमानी किताबें अपनी अस्ल हालत में मौजूद थीं?

उत्तरः कुरआन मजीद सातवीं सदी (610 ई0) में उतरना शुरू हुआ। उस वक़्त पहले की कोई भी आसमानी किताब अपनी अस्ल हालत में मौजूद नहीं थी।

प्रश्नः क्या मुकम्मल कुरआन मजीद एक ही बार में उतरा था?

उत्तरः जी नहीं! कुरआन मजीद एक ही बार में नहीं उतरा बल्कि मुख़्तलिफ मौक़ों पर थोड़ा– थोड़ा उतरा था।

❖❖❖

Scanned with OKEN Scanner

हिजरी नए साल का संदेश

मौलाना मो0 ज़ैनुलहक़ नदवी

इस्लामी कैलेंडर का आखिरी महीना ज़िलहिज्जा अब मुकम्मल होने वाला है और यह साल 1447 हिजरी की खूबसूरत यादें, और दुख– तकलीफ़ के वाकिआत और इंसान की फानी ज़िंदगी का संदेश देकर अलविदा कह रहा है। दरअसल जब साल ख़त्म होता है तो ज़िंदगी की बहारें भी एक साल कम हो जाती हैं और इंसान अपनी उम्र पूरी करने की तरफ़ बढ़ता रहता है।

बेशक हर आने वाला साल हमारे बीच एक मक़सद भरा संदेश लेकर आता है। हिजरी साल की शुरुआत एक ऐसे महीने से होती है जिसको ''मुहर्रमुलहराम'' कहते हैं, जिसकी इस्लाम में बड़ी अहमियत और फज़ीलत है। इस्लामी इतिहास में जिन बड़ी कामयाबियों और बेमिसाल कुर्बानियों का जिक्र मिलता है, यह महीना उनका केन्द्र और गवाह रहा है। मुहर्रम का महीना उम्मत–ए–मुस्लिमा के अंदर हक़ और बातिल से जुड़ी सही समझ को जगाता है। एक सच्चे मुसलमान की जिंदगी का मकसद अल्लाह की रजा हासिल करना और उसके दीन को सरबुलंद करना है। उसका हर काम इसी मकसद के तहत चलता रहता है। वह अपनी बात और काम से दीन ए इस्लाम के सच्चे और तमाम इंसानों के लिए रहमत होने की गवाही देता है। इन कोशिशों के साथ–साथ उसकी यह दिली तमन्ना होती है कि राह–ए–हक़ में अपनी जान और माल से ख़िदमत की जाए और ज़रूरत पड़ने पर इस राह में शहादत की नेमत पाई जाए। और बेइख्तियार उसके होंठों पर दुआ जारी रहती है ''ऐ अल्लाह, मुझे अपनी राह में शहादत नसीब फरमा।''

साल का अंत महीने जिल–हिज्जा पर होता है। जिल–हिज्जा की 18 तारीख सन 35 हिजरी को अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की दर्दनाक शहादत का वाकिया पेश आया। इसी महीने की 26 तारीख सन 23 हिज़री में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु पर नमाज़–ए–फज्र की हालत में जानलेवा हमला हुआ, जो कुछ दिन बाद शहादत का सबब बना। मुहर्रम की दस तारीख सन 61 हिजरी को नवासा–ए– रसूल हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को मकाम–ए–कर्बला में शहीद किया गया।

इस्लामी इतिहास में ऐसे वाकियात बहुत हैं जो हमें यह सबक़ देते हैं कि इस्लाम में ऐसी ही मोमिनाना ज़िंदगी मतलूब है जो अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की नज़र में बेहद मुहतरम और आख़िरत में बड़े अज्र का सबब हो। उम्मत के इस जज्बा –ए–कुर्बानी को और मजबूत करने के लिए हिज़रत का सबक भी मौजूद है। अहदे फ़ारूक़ी में जब इस्लामी कैलेंडर की ज़रूरत पड़ी तो मजलिस–ए–शूरा की एक अहम बैठक हुई और इस बात पर विचार हुआ कि इस कैलेंडर को किस नाम से पुकारा जाए।

वैसे तो इस्लामी इतिहास में ऐसे बहुत से बड़े वाकियात थे जिनसे कैलेंडर को नाम दिया जा सकता था, जैसे हुजूर अकरम ﷺ की यौम–ए–पैदाइश, वाकिया–ए–मेराज, वाकया–ए–गजवा–ए–बद्र, वाकिया–ए–फतह –ए–मक्का आदि।

Scanned with OKEN Scanner

लेकिन इन सबके बजाय वाकया–ए–हिजरत को सबसे ज़्यादा अहम तसलीम किया गया और इसी से इस्लामी कैलेंडर को नाम दिया गया। हिजरत का यह इंतिखाब बड़ी गहरी बात है और इसमें कई हिकमतें छुपी हैं।

हुजूर अकरम ﷺ की अजीम इस्लामी तहरीक की जिद्दोजुहद में हिज़रत का वाकिया बज़ाहिर एक नाखुशगवार वाकिया है, लेकिन हक़ीक़त यह है कि यह इस्लामी इन्क़लाब की तरफ एक अहम पेशकदमी है। सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने इसीलिए इस्लामी कैलेंडर को किसी शख़्सियत, खानदान या क़ौम की तरफ़ मंसूब करने के बजाय वाकया–ए–हिजरत की तरफ मंसूब किया। चुनांचे हर बार जब मुसलमान अपने नए साल का आगाज़ करते हैं तो वे उस मरहले की याद ताज़ा करते हैं जब मक्का की तकलीफों और जब्र और तशद्दुद के माहौल से निकलकर एक पुरसुकून फिजा शहर–ए–मदीना में क़दम रख रहे थे। यह अल्लाह की हिकमत है कि हिजरत की तारीख नए साल की तारीख के साथ इस तरह मिल गई कि हिजरत ही मुसलमानों के लिए नए साल का मौजू बन कर रह गई।

हिज़रत के बाद मदीना में ईमान वालों को एक मज़बूत किला और कायम रहने वाला मरकज मिल गया। मुसलमानों को आज़ादी से इबादत करने और हुजूर ﷺ के पास आने जाने का मौका मिल गया। अहल–ए–इस्लाम चैन से जिंदगी गुज़ारने लगे। इस्लामी ज़िंदगी और समाज की साफ तस्वीर सामने आई, और इस्लाम के आर्थिक नियमों पर अमल करने का रास्ता आसान हो गया। तालीमात–ए–इस्लाम की नशर–ओ–इशाअत के लिए पाकीज़ा माहौल मुहैया हुआ। एक इस्लामी हुकूमत कायम हुई जिसके अमीर खुद हुजूर ﷺ थे। हिज़रत के बाद इस्लाम की दावत में तेजी आई और चंद बरसों के अंदर इस्लाम का पैगाम तेज रफ़्तारी के साथ दुनिया के हर कोने में पहुंच गया। देखते–देखते इंसानों की ज़िंदगियों में सालेह इन्क़लाब आ गया। इस्लाम की इसी जाहिरी और बातिनी शान–ओ–शौकत के पेश–ए–नज़र हिज़रत की तारीख से इस्लामी कैलेंडर की शुरुआत की गई।

हिज़रत का मतलब सिर्फ "एक जगह से दूसरी जगह जाना" के नहीं हैं, बल्कि हर उस अमल और हर उस काम को छोड़ने के भी हैं जो अल्लाह और उसके रसूल ﷺ को नापसंद हैं। हदीस में है "हक़ीक़ी मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफूज़ रहें, और मुहाजिर वह है जो उन चीज़ों को छोड़ दे जिनसे अल्लाह ने मना किया है।"

इस मतलब की बिना पर लफ़्ज़ "हिजरत" अपने अंदर एक इन्क़लाबी ताक़त रखता है। जो लोग इस जज़्बे के साथ हर समय काम में लगे रहेंगे, अल्लाह तआला की मदद और कामयाबी उन्हें हासिल होगी।

इस हकीकत के पेश–ए–नज़र इस्लाम में हिजरत और शहादत की बड़ी अहमियत और फजीलत है और इन्हें बंद–ए–मोमिन की इम्तियाजी खूबी बताया गया है। "अल्लाह के यहां तो उन्हीं लोगों का दर्जा बड़ा है जो ईमान लाए और जिन्होंने उसकी राह में हिजरत की और जान व माल से जिहाद किया वही कामयाब हैं। उनका रब उन्हें अपनी रहमत और खुशनूदी और ऐसी जन्नतों की

शेष पृष्ठ ....32..पर

पड़ोसियों के अधिकार

डिजिटल पड़ोस: आभासी संबंधों की विस्तृत दुनिया

इरफान वहीद

आधुनिक डिजिटल तरक्की ने ''पड़ोसीपन'' के विचार में जबरदस्त बदलाव ला दिया है। आज के हंगामी माहौल में करोड़ों लोगों की सुबह उन वर्चुअल (आभासी) समुदायों की ख़बरों और संदेशों से होती है जो भौगोलिक सीमाओं से बंधे नहीं हैं। हमारा पड़ोस अब सिर्फ हमारे घरों के पास या आस–पास के घरों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि अब हमारे पड़ोसियों में वे लोग भी हैं जिनसे हमारा लगातार संबंध फेसबुक, व्हाट्सऐप, स्लैक और दूसरे प्लेटफॉर्मो के जरिए बनता है। यह प्लेटफॉर्म वह डिजिटल मोहल्ले हैं, जिन पर भी असली पड़ोस जैसा ही एहसास होता है, क्योंकि लोगों से बातचीत, लेन–देन और रिश्तों की वही दुनिया यहां भी आबाद है जो असली पड़ोस में होती है। फर्क सिर्फ फिजिकल और वर्चुअल परदे का है।

''डिजिटल पड़ोस'' से अभिप्राय किसी भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन गेमिंग कम्युनिटी या प्रोफेशनल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म पर लोगों का किसी खास या आम मकसद से अस्थायी या लंबे समय के लिए एक–दूसरे से जुड़ना है। यह एक ऐसा वर्चुअल स्पेस है जहाँ समान रुचि, उद्देश्य या पहचान वाले लोग आपसी संपर्क, सहयोग और रिश्ते बनाने के लिए इकट्ठे होते हैं। भौगोलिक पड़ोस के उलट, ये डिजिटल समुदाय प्राकृतिक सीमाओं, समय क्षेत्रों और सांस्कृतिक बाधाओं से मुक्त होते हैं, जिससे वैश्विक ऐकता और सहयोग के बेमिसाल मौके पैदा होते हैं।

आँकड़े देखिए, फेसबुक हर महीने 3 अरब से ज़्यादा उपयोगकर्ताओं की मेजबानी करता है, जबकि व्हाट्सऐप रोजाना 100 अरब से ज़्यादा संदेशों का आदान–प्रदान कराता है। लिंक्डइन जैसे पेशेवर प्लेटफॉर्म कैरियर निर्माण के ज़रूरी औजार बन चुके हैं, जो दुनिया भर के 930 मिलियन पेशेवरों को आपस में जोड़ते हैं। डिजिटल स्पेस ने मुस्लिम समुदाय को भी आपसी भाईचारे के रिश्ते मजबूत करने, धार्मिक ज्ञान के प्रसार और सीमाओं से परे एक–दूसरे की मदद करने

इंसानों पर सामूहिक जीवन में जो सामाजिक नियम और सिद्धांत लागू होते हैं, वे डिजिटल दुनिया में ख़त्म नहीं हो जाते, लेकिन जब डिजिटल पड़ोसी इन नियमों को नजरअंदाज करते हैं और एक–दूसरे के अधिकारों की परवाह नहीं करते, तो उसके नतीजे व्यक्तिगत रिश्तों की ख़राबी से कहीं ज़्यादा गंभीर होते हैं। बिगड़े हुए पड़ोसी असली ज़िंदगी की तरह यहाँ भी एक–दूसरे के लिए परेशानी का सबब बनते हैं।

साइबर अपराध भी ऐसे ही बिगड़े हुए डिजिटल पडोसियों का नतीजा हैं, जिनके चलते वैश्विक आर्थिक नुकसान हर साल 7 से 10 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँच चुका है। जबकि कार्यस्थल पर रवैयों के बिगाड़ से जो अब ज़्यादातर डिजिटल फॉर्मेट में अंजाम पाता है, सिर्फ अमेरिकी कारोबार को हर साल 20 बिलियन डॉलर से ज़्यादा का नुकसान होता है।

Scanned with OKEN Scanner

कोविड–19 महामारी के बाद वैश्विक स्तर पर इंटरनेट के इस्तेमाल में 50 से 70 प्रतिशत तक इजाफा हो गया, लेकिन इसके साथ साइबर उत्पीड़न और डिजिटल अराजकता में भी बड़े पैमाने पर इज़ाफ़ा हुआ। कुछ डिजिटल प्लेटफॉर्म तो सबसे बुरे मानवीय व्यवहारों के औजार बन गए, जिनमें ट्रोलिंग, उत्पीड़न, गोपनीयता का उल्लंघन और तेजी से झूठी सूचनाओं का प्रसार शामिल है। इन व्यवहारों का आर्थिक नुकसान आँखें खोल देने वाला है। ऑनलाइन उत्पीड़न से आमदनियों का भारी नुकसान हो रहा है। डिजिटल रवैयों की बुनियाद पर होने वाले मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं पर करोड़ों डॉलर खर्च हो रहे हैं। कार्यस्थल पर अपमानजनक रवैये *(work & place bullying)* और व्यक्तिगत धमकियाँ डिजिटल चैनलों पर तेजी से बढ़ रही हैं, जिससे औसतन हर साल उत्पादकता में 4 से 5 हजार डॉलर का नुकसान होता है। साइबर बुलिंग के शिकार लोगों में आत्महत्या की कोशिश करने की संभावना 3–4 गुना ज़्यादा पाई गई है।

यह सिर्फ आँकड़े नहीं हैं, लाखों बर्बाद कैरियर, आर्थिक उथल–पुथल, बिखरी मानसिक सेहत ये सब डिजिटल आदत के वही नतीजे हैं जो चीख–चीख कर कह रहे हैं कि जब डिजिटल दुनिया के नियम तोड़े जाते हैं और डिजिटल पड़ोसियों के अधिकारों की अनदेखी की जाती है, तो असली दुनिया भी इसके संकटों से सुरक्षित नहीं रह सकती।

यह आँकड़े एक बुनियादी हक़ीक़त की निशानदेही करते हैं, वह यह कि हमारे डिजिटल पड़ोस के स्तर का सीधा असर न सिर्फ हमारे ऑनलाइन अनुभव, बल्कि हमारी शारीरिक सेहत, आर्थिक समृद्धि और सामाजिक स्थिरता पर भी पड़ता है।

ट्रोलिंग (डिजिटल यातना):–

डिजिटल स्पेस के सबसे अंधेरे पहलुओं में एक ऐसी दुनिया छुपी है जो अधिकारों की पारस्परिक अवहेलना का नतीजा है– ट्रोलिंग 1980 और 1990 के दशक में एक तरह की अपेक्षाकृत निर्दोष छेड़छाड़ के रूप में शुरू हुई थी, लेकिन आज यह एक बुरे व्यवहार का रूप ले चुकी है। आधुनिक ट्रोलर जानबूझ कर उकसाने वाले, बुरी नीयत से या अपमानजनक सामग्री के ज़रिए लोगों को निशाना बनाते हैं और उन्हें मानसिक तौर पर नुकसान पहुंचाते हैं। वे डिजिटल संवाद की गुमनामी और दूरी का फायदा उठाकर ऐसे व्यवहार में शामिल होते हैं, जिससे वे शायद असली जिंदगी में बचना चाहेंगे।

हालिया शोध से ट्रोलिंग की विनाशकारी ताक़त की असली गंभीरता का पता चलता है। एक अध्ययन के मुताबिक विश्वविद्यालय के 74 प्रतिशत छात्र हफ़्ते में कम से कम एक बार ऑनलाइन ट्रोलिंग का शिकार होते हैं, जबकि 13 से 18 साल की उम्र के 42.8 प्रतिशत किशोर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर ट्रोल किए जाने की शिकायत करते हैं।

इसके मानसिक असर गंभीर और लंबे समय तक रहने वाले होते हैं। ट्रोलिंग के शिकार किशोरों में से 67 प्रतिशत में अवसाद (डिप्रेशन) के लक्षण पैदा हो जाते हैं, जिसमें ट्रोलिंग के अनुभव और अवसाद की घटनाओं के बीच मजबूत संबंध पाया गया है। इसके आर्थिक नतीजे भी हैरान करने वाले हैं। उत्पादकता में कमी, अनुपस्थिति में बढ़ोतरी और स्वास्थ्य देखभाल पर ख़र्च के कारण संगठनों को हर साल एक लाख डॉलर तक के नुकसान का सामना करना पड़ता है।

Scanned with OKEN Scanner

ऑनलाइन सामग्री बनाने वाले, जो आधुनिक डिजिटल अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी कहलाते हैं, ट्रोलिंग की वजह से बड़े पैमाने पर थकान, प्रेरणा की कमी और रचनात्मक अभिव्यक्ति से बचने लगते हैं। कई लोग अपने प्लेटफॉर्म को पूरी तरह छोड़ देते हैं, यह मानवीय रचनात्मकता और आर्थिक क्षमता का बड़ा नुकसान है।

शायद सबसे चिंताजनक बात ट्रोलिंग की इंटरनेट पर वायरल होने की स्थिति है। स्टैनफोर्ड और कॉर्नेल विश्वविद्यालयों के शोध से पता चला है कि ट्रोलिंग का व्यवहार संक्रामक *(Infectious)* है, जो डिजिटल समुदायों में एक व्यक्ति से दूसरे में फैलता है। ट्रोल पोस्टों का शिकार होने वाले उपयोगकर्ताओं में खुद ट्रोलिंग के रवैये में लिप्त हो जाने की संभावना ज़्यादा होती है, जिससे ऐसे असर पैदा होते हैं जो पूरे ऑनलाइन माहौल को जहरीला बना सकते हैं।

अध्ययनों से यह भी पता चला है कि ख़राब मूड और पहले की ट्रोलिंग का सामना कर चुके व्यक्ति के ट्रोलिंग में शामिल होने की संभावना लगभग दोगुनी हो जाती है। ज़्यादातर लोग किसी न किसी रूप में डिजिटल बुलिंग *(Digital Bullying)* का सामना करते हैं। यह फैल कर एक सामूहिक कोशिश बन जाती है, जिसमें सबसे आम ट्रोलिंग रवैया "लाइक", "शेयर" और "री–शेयर" करना होता है, मानो इस तरह ट्रोलिंग की टिप्पणियों का समर्थन और प्रसार किया जा रहा हो। इस सामूहिक ट्रोलिंग से हानिकारक सामग्री का असली अपराधी की बहुत कम कोशिश के साथ बड़े पैमाने पर प्रसार–प्रचार हो जाता है।

डिजिटल यातना देने वालों की मानसिकताः–

आम लोग डिजिटल यातना देने वाले *(Digital Bully)* क्यों बन जाते हैं?मानसिक शोध ऐसे कई अहम कारकों की पहचान करते हैं। इंटरनेट पर चूंकि अनैतिक कृत्य करने वाला व्यक्ति कथित गुमनामी *(Anonymity)* में होता है और उसे लगता है कि उसकी पहचान परदे में रहेगी। यह विश्वास एक ऐसे एहसास को जन्म देता है जिसे मनोवैज्ञानिक *(Disinhibition effect)* कहते हैं। यानी कि दुष्ट हरकत करने में पहचान जाहिर होने का जो डर था, वह अब नहीं रहा और जैसे ट्रोलिंग करने में यह आखिरी बाधा भी खत्म हो जाती है। इस वजह से एक आम व्यक्ति ऐसे रवैये में शामिल हो जाता है, जिसे शायद असली जिंदगी में वह कभी करने का विचार मन में न लाए। ट्रोल और शिकार के बीच पर्दा और दूरी वह मानसिक दूरी पैदा करते हैं जो सहानुभूति और नैतिक संयम को खत्म कर देते हैं। अल्लामा इक़बाल के शब्दों में–

है दिल के लिए मौत मशीनों की हुकूमत
एहसासे–मुरव्वत को कुचल देते हैंआलात

अध्ययनों से पता चलता है कि ट्रोलर अक्सर इसी कम सहानुभूति *(Low empathy)* का प्रदर्शन करते हैं और दूसरों को तकलीफ पहुंचाने से उन्हें खुशी होती है। हालांकि, स्टैनफोर्ड कॉर्नेल के शोध इस विचार को चुनौती देते हैं कि ट्रोलिंग मूल रूप से कोई स्वाभाविक व्यक्तिगत गुण *(Personality trait)* है। उनके नतीजों से पता चलता है कि परिस्थितियाँ– जैसे खराब मूड, पहले से ट्रोलिंग का अनुभव और बहस के संदर्भ, आम उपयोगकर्ताओं को भी ट्रोल जैसे व्यवहार में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

इस शोध के डिजिटल पड़ोस *(Digital neighbor hood)* के लिए गहरे निहितार्थ हैं। अगर ट्रोलिंग व्यक्तिगत गुण से ज़्यादा परिस्थितियों के आधार पर की जाती है, तो प्लेटफॉर्म डिजाइन, समुदाय का संशोधन और

Scanned with OKEN Scanner

सांस्कृतिक नियमों में बदलाव नाटकीय रूप से इसके फैलाव को कम कर सकते हैं। यानी इसका समाधान ऐसा डिजिटल माहौल पैदा करने में निहित है जो इस तरह के विनाशकारी प्रेरकों और रवैयों को प्रोत्साहित करने के बजाय सकारात्मक रवैयों को बढ़ावा दें।

डिजिटल पड़ोसियों के लिए इस्लामी मार्गदर्शनः–

डिजिटल ख़राबी की इस अफरातफरी में, इस्लाम नैतिक व्यवहारों के लिए एक व्यापक ढांचा पेश करता है जो हमारी समसामयिक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करता है। पड़ोसी के अधिकारों के बारे में कुरआन में सूरह निसा की आयत 36 डिजिटल समुदायों के लिए भी एक उज्ज्वल सिद्धांत प्रदान करती है–

"और अल्लाह ही की बंदगी करो और किसी चीज़ को भी उसके साथ शरीक न ठहराओ, और माँ–बाप के साथ अच्छा बर्ताव करो, और रिश्तेदारों, अनाथों और ज़रूरतमंदों के साथ, और रिश्तेदार पड़ोसी और अजनबी पड़ोसी के साथ, और अपने साथ रहने वाले साथी और मुसाफिर के साथ अच्छा व्यवहार करो।" (कुरआन, 4:36)

यह ईश्वरीय आदेश निकट और दूर के पड़ोसियों के लिए सामाजिक ज़िम्मेदारी का एक क्रम (*Hierarchy*) निर्मित करता है। हमारे डिजिटल दौर में, हमारे "करीबी पड़ोसी ऑनलाइन वर्क ग्रुपों में वे लोग हो सकते हैं जिनसे हमारा सामना ज़्यादा होता है, जबकि दूर के पड़ोसी में वे व्यापक समुदाय शामिल हैं जिनके साथ हम कभी–कभार सोशल प्लेटफॉर्मों पर जुड़ते हैं। इस्लाम ने पड़ोसी के साथ अच्छे बर्ताव के ऐसे सिद्धांत दिए हैं जो आज ट्रोलिंग और डिजिटल उत्पीड़न *(Digital Harassment)* के संकटों का समाधान हैं। एक हदीस में कहा गयाः–

"अल्लाह की कसम, वह व्यक्ति मोमिन नहीं हो सकता जिसका पड़ोसी उसके बुरे आचरण से सुरक्षित न हो।" यह ताकीद इस बात को दिखाती है कि इस्लाम इंसानों को दूसरों इंसानों की बुराई से बचाने को कितनी अहमियत देता है। डिजिटल माहौल में भी यह सिद्धांत समान रूप से लागू होता है। एक और हदीस में इस बात को पुष्टि करते हुए फरमाया गयाः–

"वह व्यक्ति जन्नत में दाख़िल नहीं होगा जिसका पड़ोसी उसके बुरे आचरण से सुरक्षित न हो।" कुरआन उन रवैयों पर कड़ी पकड़ करता है जिनसे आधुनिक ट्रोलिंग पोषण पाता है। सूरह हुजुरात में अल्लाह का फरमान हैः–

"ऐ ईमान लाने वालो! न मर्दों का कोई गिरोह दूसरे मर्दों का मजाक उड़ाए, हो सकता है वे उनसे बेहतर हों। और न औरतें दूसरी औरतों का मजाक उड़ाएं, क्या पता वे उनसे बेहतर निकलें।" (कुरआन, 49:11)

यह आयत सीधे तौर पर ट्रोलिंग के रवैये के मूल तत्वों से रोकती है–

- **उपहास या मजाक उड़ानाः**– उकसाने या भड़काने के लिए दूसरों का मज़ाक उड़ाना।
- **अपमानः**– दूसरों के चरित्र या साख पर हमला करना।
- **बुरे उपनामों से पुकारनाः** दूसरों को नीचा दिखाने के लिए अपमानजनक उपनामों का प्रयोग करना।

उपहास, अपमान और बुरे उपनामों से पुकारने का यह रवैया– चाहे शब्दों के ज़रिए हो या इशारों, नकल आदि के जरिए, उसका आम नतीजा दूसरों को दुख पहुंचाता है और उन्हें तुच्छ ठहराता है। इसका मूल स्वभाव अहंकार है, यानी खुद को दूसरों

Scanned with OKEN Scanner

से बेहतर मानना। पवित्र कुरआन में इसकी तरफ एक गहरा इशारा दिया है–

"हो सकता है वे तुमसे बेहतर हों।" (कुरआन, 49:11)।

मानो यह आयत ट्रोलिंग करने वालों की श्रेष्ठता की मानसिकता को चुनौती देती है। इस्लामी दृष्टिकोण से ज़बानी ज़्यादती और शारीरिक हिंसा की गंभीरता में बहुत अंतर नहीं है। एक हदीस में है–

"किसी मोमिन पर लानत करना उसे क़त्ल करने के बराबर है।"

(हदीस बुखारी और मुस्लिम)

इस हदीस की तुलना आधुनिक मनोविज्ञान की उस मान्यता से की जा सकती है कि कभी–कभी इंसान के शब्द शारीरिक चोटों से भी अधिक लंबे समय तक नुकसान पहुँचाते हैं।

एक और हदीस से डिजिटल व्यवहार के लिए मार्गदर्शन मिलता है–

"मोमिन न तो ताने देने वाला होता है, न लानत करने वाला, न गाली देने वाला, और न बुरी ज़बान वाला।"

मज़ाक करते समय भी ईमान वालों को ऐसी भाषा से बचना चाहिए जिससे दूसरों को तकलीफ या नुकसान पहुँचने की संभावना हो या उसका अपमान हो। ऊपर की चर्चा से डिजिटल पड़ोस के लिए एक स्पष्ट सिद्धांत निकलता है:–

एक सच्चे मोमिन के लिए जरूरी है कि उसके ऑनलाइन पड़ोसी डिजिटल नुकसान से सुरक्षित रहें। यह नुकसान किसी भी रूप में हो सकता है– ट्रोलिंग, उत्पीड़न, डिजिटल माध्यमों से दूसरों का दिल दुखाना या तकलीफ पहुँचाना, निजता का उल्लंघन या गलत सूचनाओं का प्रसार।

❖❖❖

पृष्ठ .....27... का शेष

खुशखबरी देता है जहां उनके लिए कभी न खत्म होने वाले ऐश के सामान हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। यकीनन अल्लाह के पास खिदमात का सिला देने के लिए बहुत कुछ है।"

(सूरः अल–तौबः 20–22)

सच बात तो यह है कि हिजरत और शहादत जैसे मतलूबा औसाफ ही के जरिए अल्लाह और उसके रसूल ﷺ से सच्ची मुहब्बत, इस्लाम की दावत व इशाअत और बुराइयों के ख़ात्मे के लिए अनथक कोशिश, फिक्र–ए–आखिरत और दुनिया से बेरगबती मुमकिन है। जिस बंद–ए–मोमिन के अंदर ये औसाफ परवान चढ़ते हैं, उसे दुनिया और आखिरत की कामयाबी नसीब होती है। आने वाला हर नया इस्लामी साल जिंदादिलों को दस्तक देता है यह जायज़ा लेने के लिए कि किस हद तक अल्लाह और उसके रसूल ﷺ के इन पसंदीदा आमाल का जज़्बा हमारे अंदर मौजूद है।

साल के अंत में इबादात, मुआमलात, आमाल, हलाल व हराम की तमीज, हुकूक–उल्लाह और हुकूक–उल–इबाद की अदाएगी के मैदान में अपनी जिंदगी का मुहासबा करके देखना चाहिए कि हमसे कहां–कहां गलतियां हुईं। क्योंकि इंसान दूसरों की नज़रों से तो अपनी गलतियां और कोताहियां छुपा सकता है, लेकिन खुद अपनी नज़रों से नहीं।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का यह कौल याद रखना होगा "तुम खुद अपना मुहासबा करो, इससे पहले कि तुम्हारा हिसाब लिया जाए।" अल्लाह हम सबको अपने जायजे और मुहासबे और आगे की ज़िन्दगी की मंसूबाबंदी करने की तौफीक़ नसीब फरमाए।

आमीन।

❖❖❖

Scanned with OKEN Scanner

मुस्लिम व्यक्ति, मुस्लिम परिवार मुस्लिम समूह

मुहम्मद इक़बाल नदवी

इस समय संसार में मुसलमान लगभग दो अरब की संख्या में हैं अर्थात पूरी दुनिया की एक चौथाई आबादी मुसलमानों की है मगर क्या वास्तव में ये सब इस्लाम की शिक्षाओं का आज्ञा पालन करते हैं क्या पूरे मुस्लिम समाज का जीवन इस्लाम का परिचय करा रहा है?

व्यक्तिगत जीवन हो या सामाजिक जीवन, इस्लाम जीवन के कुछ भागों में तो दिखाई देता है बाकी सम्पूर्ण जीवन पश्चिमी सभ्यता का प्रतीक दिखाई देता है यानी कभी काबा और कभी कलीसा, जब कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को हुक्म दिया है कि ऐ ईमान वालो पूरी तरह इस्लाम में दाखिल हो जाओ, जीवन के हर भाग में ईमान व इस्लाम का प्रकाश हो। क्योंकि इस्लाम खुदा का वह पसंदीदा मार्ग है जिस पर चलने वालों से वह खुश होता है और न चलने वालों से नाराज़ होता है। हम आज देखते हैं कि मुसलमान पूरे संसार में परेशान हैं उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता है उसका कारण यही है कि मुसलमान ना तो व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन में वह सच्चा मुसलमान है और ना ही सामूहिक जीवन में इस्लाम दिखाई देता है। इसलिए आज के समय में अतिआवश्यक है कि हम समस्त भागों में सच्चाई के साथ इस्लाम का परिचय अपने जीवन से करायें इसके लिए हम को इन तीन बिन्दुओं पर अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है:–

1. व्यक्तिगत मुसलमान होना इसका अर्थ है कि हम अपनी निजी ज़िन्दगी में सच्चे मुसलमान बनने की भरपूर कोशिश करें इस्लाम हर व्यक्ति के अन्दर ऐसी सच्ची भावना देखना चाहता है जो उसको खुदा के करीब कर दे जिसके अन्दर हर घड़ी अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने की जिज्ञासा हो, जो हर समय हर कार्य में सही गलत की पहचान करता हो, क्या करना है क्या नहीं इसका भी ज्ञान हो, हर घड़ी वह सच्चाई के साथ खड़ा रहे, झूठ से ऐसी घृणा हो जैसे किसी दूसरे गलत कार्य से घृणा होती है समय पर खुदा की इबादत करना समय पर सोना समय पर खाना, समय पर अपने कारोबार में लग जाना खुशी के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करना एक अच्छे और सच्चे मुसलमान की पहचान है। इसी प्रकार वह अपने अन्दर ऐसी सकारात्मक सोच पैदा करे कि मुसीबत की घड़ी में भी धैर्य और सब्र का दामन उसके हाथ से ना छूटने पाये, अपने पूरे वजूद को इस्लामी रंग में रंग ले, हर घड़ी खुदा की आज्ञा पालन की भावना उत्पन्न रहे और उसकी अवहेलना से सदैव अपने आप को बचाने की कोशिश करे।

2. फिर इस व्यक्ति की ज़िम्मेदारी बनती है कि अपने परिवार और खानदान की तरफ पूरा ध्यान रखे उसके सदव्यवहार की झलक परिवार में भी दिखाई दे रही हो, पूरा परिवार खुदा के बताए हुए मार्ग पर चलने का प्रयास करे, क्योंकि जब परिवार में इस्लामी शिक्षाओं का सौन्दर्य दृष्य देखने को मिलता है तो उसको देख कर दूसरे लोग भी प्रभावित होते हैं और अपनी जीवन शैली में परिवर्तन लाते हैं।

जब परिवार के लोग सच्चाई, अमानतदारी तथा शिष्टाचार, नैतिकता और उच्च आचरण के ज़ेवर से सुसज्जित

Scanned with OKEN Scanner

होते हैं तो उसका प्रभाव उनकी आने वाली संतान पर भी पड़ता है। और कभी कभी उस परविार के किसी एक व्यक्ति के किसी एक ही अच्छे कर्म से पूरे समूह और गिरोह में बदलाव आ जाता है। हम यहाँ एक छोटी सी कहानी को लिख रहे हैं जिसमें सबके लिए प्रेरणा और सच्चाई के मार्ग पर चलने का मार्गदर्शन है।

पुराने ज़माने की बात है एक छोटा सा बालक इस्लामी शिक्षा ग्रहण करने के लिए अपने घर से दूर यात्रा पर निकल पड़ा चलते वक्त उसकी माँ ने उसे कभी भी झूठ न बोलने की नसीहत की, जब वह बालक अपने काफिले के साथ जा रहा था तो रास्ते में काफिले पर डाकुओं ने धावा बोल दिया और पूरे काफिले को लूट लिया एक डाकू ने चलते वक़्त उस बालक से कहा कि क्या तुम्हारे पास भी कुछ है, बालक ने कहा कि हाँ, मेरे पास चालीस सोने की अशरफियाँ हैं, डाकू उसको पकड़ कर अपने सरदार के पास ले जाता है सरदार ने कहा, कहाँ हैं तुम्हारे पास अशरफियां, उस लड़के ने अपने पैजामे की गोट से वह अशरफियाँ निकाल कर उस को देदीं, डाकुओं के सरदार ने कहा कि तुमने सच बोल कर अपना नुकसान कर लिया तुम झूठ बोलकर अपने माल की रक्षा कर सकते थे मगर तुमने ऐसा नहीं किया, उस बालक ने कहा कि मेरी माँ ने मुझे हर स्थिति में सच बोलने के लिए कहा था तो फिर मैं इन सिक्कों की खातिर असत्य कैसे बोल सकता था लड़के का जवाब सुनकर डाकुओं को बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक बालक अपनी माँ की आज्ञा का कितनी कठोरता से पालन करता है और हम लोग अपने खुदा के आदेशों का किस प्रकार उलंघन करते हैं उस बालक के इस सच्चे कर्म का उन डाकुओं पर बड़ा प्रभाव पड़ा, खुदा तआ़ला से सच्ची क्षमा माँगी और सच्ची तौबा करके एक अच्छा जीवन व्यतीत करने का संकल्प लिया। इस प्रकार हम यह देखते हैं कि जब व्यक्ति पारिवारिक मुस्लिम होता है तो उसके जीवन का प्रभाव दूसरे लोगों पर भी पड़ता है।

3. जब परिवार मुसलमान बन जायेगा तो पूरा समाज सही हो सकता है क्योंकि परिवार एक छोटा समूह होता है और क़ौम या वर्ग उससे बड़ा समूह होता है जब छोटे छोटे परिवार इस्लाम का परिचय अपने जीवन से करायेगें तो यही सब मिलकर उम्मत बनते हैं जिसमें सबके अधिकार बताए गये हैं पति पत्नी के अधिकार, पिता पुत्र के अधिकार, बड़े छोटों के अधिकार, रिश्तेनातों के अधिकार, पास पड़ोस में रहने वालों के अधिकार, राजा प्रजा के अधिकार, घरेलू और बाहरी हक़ और अधिकार, इन सबके बारे में इस्लाम ने विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला है और सबको एक साथ प्रेम व भाईचारे के साथ एक शरीर के मानिन्द रहने की शिक्षा दी जिस प्रकार एक माला में आनेकों प्रकार के क़ीमती मोती होते हैं अगर उनकी डोरी कमज़ोर पड़ जाए या वह टूट जाए तो सब मोती बिखर जायेंगे। फिर इन बिखरे हुए मोतियों की कोई क़ीमत नहीं होती है। इसी प्रकार मुस्लिम समुदाय पूरा एक दूसरे के साथ भाईचारे के रिश्तों की मज़बूत डोर में बंधा हुआ है अब अगर यह बिखरेगा या सामूहिक जिम्मेदारियों की लड़ी को तोड़ना चाहेगा तो इसकी भी कोई हैसियत नहीं रह जायेगी पूरा मुस्लिम समुदाय चाहे वह किसी वर्ग या क़बीले का हो सबके सब एक ही रिश्ते में बंधे हुए हैं वह रिश्ता है ईमान का, इस्लाम का जिसे परवरदिगारे आलम ने बाँधा है तो आइये हम सब मिल कर यह साबित करें कि हम व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक व सामूहिक जीवन में भी हम मुसलमान हैं और हमारा मात्र एक केन्द्र बिन्दु इस्लाम है।

❖❖❖

Scanned with OKEN Scanner

नदवतुल उलमा में दो दिवसीय तफ़हीम-ए-शरीअ़त वर्कशाप:-

(शरीअत की सही समझ की ओर एक अहम क़दम)

मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की निगरानी में दारुल उलूम नदवतुल उलमा में 19–20 मई 2026 को आयोजित दो दिवसीय "तफहीम–ए–शरीअ़त" वर्कशॉप सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इस वर्कशॉप का उद्देश्य समाज, विशेष रूप से युवाओं और शिक्षित वर्ग के बीच शरीअत और इस्लामी शिक्षाओं के संबंध में फैल रही गलतफ़हमियों को दूर करना तथा शरीअत की संतुलित और प्रामाणिक समझ प्रस्तुत करना था।

वर्कशॉप का उद्घाटन हैदर हसन खान टोंकी हॉल में हुआ, जहाँ देश के प्रतिष्ठित उलमा, बुद्धिजीवी, शिक्षकों और छात्रों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। प्रारंभिक सत्र में अध्यक्षीय संबोधन करते हुए मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी ने कहा कि आज मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से इस्लाम और शरीअत के प्रति शंकाएँ उत्पन्न की जा रही हैं। ऐसी परिस्थिति में उलमा और ज़िम्मेदार वर्ग की यह ज़िम्मेदारी है कि वे हिकमत, संवाद और सकारात्मक शैली के साथ समाज के सामने इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को प्रस्तुत करें। उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद ﷺ की दावत और संवाद शैली का उल्लेख करते हुए कहा कि लोगों की मानसिकता और परिस्थितियों को समझकर बात करना ही प्रभावी तफहीम का आधार है।

वर्कशॉप के कन्वीनर मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी नाज़िम नदवतुल उलमा ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि आज केवल गैर–मुस्लिम समाज ही नहीं, बल्कि मुस्लिम शिक्षित वर्ग भी शरीअत की वास्तविक भावना से अनभिज्ञ होता जा रहा है। उन्होंने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि इस्लाम को केवल किताबों तक सीमित कर दिया गया है, जबकि उसकी शिक्षाएँ मानव जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

दो दिनों तक चले विभिन्न सत्रों में विरासत (मीरास), यतीम पोते की विरासत, तलाक़ व्यवस्था, गुज़ारा भत्ता, बहुविवाह और इस्लामी पारिवारिक व्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। वक्ताओं ने स्पष्ट किया कि शरीअत के नियम केवल धार्मिक आदेश नहीं, बल्कि न्याय, संतुलन और सामाजिक कल्याण पर आधारित सिद्धांत हैं। विरासत के विषय पर कहा गया कि इस्लाम ने संपत्ति के वितरण के स्पष्ट नियम निर्धारित किए हैं, जिनका आधार अल्लाह का आदेश है, न कि व्यक्तिगत इच्छा या सामाजिक दबाव।

तलाक व्यवस्था पर बोलते हुए उलमा ने कहा कि इस्लाम ने विवाह को मज़बूत और स्थायी संस्था बनाया है, किंतु जब किसी संबंध में अन्याय, असहनीयता या अत्याचार उत्पन्न हो जाए, तब तलाक़ अंतिम विकल्प के रूप में रखा गया है। साथ ही, इस्लाम ने तलाक़ से पूर्व सुलह और सुधार की अनेक संभावनाएँ भी निर्धारित की हैं। वक्ताओं ने यह भी स्पष्ट किया कि इस्लाम की पारिवारिक व्यवस्था स्त्री और पुरुष दोनों के अधिकारों की रक्षा करती है तथा समाज को नैतिक संतुलन प्रदान करती है।

वर्कशॉप में विशेष रूप से इस बात पर ज़ोर दिया गया कि "तफ़हीम–ए–शरीअत" का कार्य

Scanned with OKEN Scanner

केवल सभाओं तक सीमित न रहे, बल्कि मस्जिदों, जुमे के खुत्बों, शैक्षणिक संस्थानों और आधुनिक संचार माध्यमों के द्वारा समाज के हर वर्ग तक पहुँचे। उलमा ने सुझाव दिया कि अन्य धर्मों के लोगों के साथ संवाद और "पयाम–ए–इंसानियत" जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से इस्लाम की मानवता–हितैषी शिक्षाओं को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत किया जाए।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी ने कहा कि आधुनिक समाज में पारिवारिक विघटन और मानसिक तनाव की बढ़ती घटनाएँ यह सिद्ध करती हैं कि मानवता को एक संतुलित पारिवारिक व्यवस्था की आवश्यकता है, और इस्लाम ने इस संबंध में सबसे व्यावहारिक एवं न्यायपूर्ण मार्गदर्शन दिया है। उन्होंने विशेष रूप से महिलाओं और युवतियों के बीच बढ़ती शंकाओं को दूर करने की आवश्यकता पर बल दिया तथा कहा कि मुस्लिम समाज को आधुनिक तकनीकी माध्यमों का उपयोग कर प्रभावी ढंग से इस्लाम की सही तस्वीर पेश करनी चाहिए।

अंत में सैय्यद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी महा सचिव नदवतुल उलमा ने इस दो दिवसीय वर्कशॉप की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि आज के दौर में "तफ़हीम–ए–शरीअत" केवल एक शैक्षणिक प्रयास ही नहीं, बल्कि पूरी उम्मत की सामूहिक जिम्मेदारी बन चुका है। उन्होंने सभी अतिथियों, वक्ताओं, शिक्षकों, छात्रों और सहयोगियों का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा दुआ की कि अल्लाह तआला इस प्रयास को उम्मत और समस्त मानवता के लिए लाभदायक बनाए।

सदर–ए–मजलिस की दुआ के साथ यह दो दिवसीय वर्कशॉप सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

❖❖❖

पृष्ठ .....24... का शेष

तंगी के वक्त शैतान इंसान को बहकाता है। चोरी, झूठ, रिश्वत, धोखा, या हराम कमाई की तरफ ले जाता है। लेकिन ये सब फौरी फ़ायदे हैं, जिनका अंजाम बहुत भारी होता है जो न सिर्फ दुनिया में, बल्कि आखरित में भी। इसलिए इन सब से बचकर रहो। दूसरी तरफ नमाज़ बरकत लाती है। जो सिर्फ इबादत नहीं, बल्कि ज़िन्दगी को संवारने का जरिया है। तंगी में भी थोड़ा सदका देना रिज़्क को बढ़ाता है। यह अल्लाह की राह में दिया गया वो बीज है जो कई गुना फल देता है। रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करने और उनकी ज़रुरत पर काम आने से भी रिज़्क में बरकत होती है। गुनाहों की माफी माँगना अल्लाह की रहमत को खींच लाता है।

और हाँ कमाना तो आसान है लेकिन अपनी आमदनी को कैसे खर्च करें यह जरा मुश्किल है। अगर समझदारी से खर्च करें तो थोड़ी आमदनी भी बहुत ज़्यादा लगने लगती है। इसलिए सोच समझकर खर्च करना भी एक हुनर है जो कंजूसी और फिजूलखर्ची दोनों से दूर रखता है और छोटी आमदनी भी बड़ी लगने लगती है वरना बड़ी आमदनी भी कम पड़ जाती है

दीनी सोच हमें तंगी में भी उम्मीद देती है। यह हमें सिखाती है कि रिज़्क सिर्फ मेहनत से नहीं, बल्कि अल्लाह की रहमत से आता है, यानी रिज्क के लिए मेहनत करो और अल्लाह से दुआ करते रहो। अगर हम सब्र, शुक्र और तवक्कुल के साथ चलेंगे, तो तंगी का दौर भी तरक़्क़ी का ज़रिया बन सकता है।

❖❖❖

Scanned with OKEN Scanner

दारुल उलूम नदवतुल-उलमा में नए तालीमी साल का आगाज़

नौशाद खान नदवी

शव्वाल का चाँद नज़र आते ही जहाँ दुनिया भर में ईद की खुशियाँ मनाई जाती हैं, वहीं दीनी मदरसों में एक नई हलचल और तालीमी सरगर्मियों का आगाज़ हो जाता है। इसी क्रम में विश्व प्रसिद्ध शैक्षिक संस्थान दारुल उलूम नदवतुल उलमा में इस वर्ष एक अलग ही मंज़र देखने को मिला। नदवे की यह विशेषता है कि यहाँ आधुनिकता और परंपरा का अनूठा संगम मिलता है। रमज़ान के महीने से ही ऑनलाइन दाख़िले शुरू हो गए थे, जिसमें पुराने छात्रों के लिए नवीनीकरण और नए उम्मीदवारों के लिए इंट्रेंस फ़ॉर्म की सुविधा मौजूद थी। दाखिले के दौरान नदवा का माहौल एक छोटे संसार *(Mini World)* का रूप ले लेता है। यहाँ देश के कोने कोने एवं विदेशों के छात्र भी तालीम हासिल करने आते हैं 10 से 20 शव्वाल तक प्रवेश परीक्षा और दाखिले का सिलसिला पूरी पारदर्शिता के साथ चला। शैक्षिक सत्र का औपचारिक आगाज़ केवल किताबों से नहीं, बल्कि छात्रों की प्रतिभा निखारने वाले शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रमों (सक़ाफ़ती प्रोग्रामों) के साथ किया गया।

सत्र का सबसे पहला बयान हज़रत मौलाना शेख़ ज़करिया साहब नदवी संभली का था। आपने अपने संबोधन में छात्रों को संस्थान की असली पहचान बताया और कहा कि कोई भी मदरसा केवल इमारतों का नाम नहीं है, बल्कि उसके छात्र ही उसकी असली पहचान हैं। उन्होंने छात्रों को अनुशासन की ताकीद करते हुए नमाज़ की पाबंदी, समय की क़द्र और व्यवहार में गंभीरता बनाए रखने की नसीहत दी। आपने ज़ोर देकर कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल पैसा कमाना नहीं होना चाहिए, यदि छात्र शुद्ध रूप से दीन की ख़िदमत के लिए मेहनत करेंगे, तो अल्लाह की विशेष सहायता प्राप्त होगी।

सत्र के दूसरे प्रोग्राम में अरबी भाषा एवं साहित्य संकाय के अध्यक्ष मौलाना अलाउद्दीन नदवी साहब ने छात्रों को "एतदाल" (संतुलन) और मध्यमार्ग अपनाने का मार्गदर्शन दिया। आपने हज़रत अली और हज़रत मुआविया के ऐतिहासिक उदाहरणों से समझाया कि मतभेद होने के बावजूद आपसी सम्मान कैसे कायम रखा जाता है। उन्होंने नसीहत की कि नदवा का बुनियादी मकसद आपसी झगड़ों को खत्म करना, और सबकी सहमती से आगे बढ़ना है। उन्होंने छात्रों से कहा कि वे "हम ही हक़ पर हैं" के अहंकार के बजाय "हम भी हक़ पर हैं" का नज़रिया अपनाएं और सोशल मीडिया पर होने वाली नफरत भरी बहसों से खुद को दूर रखें।

सत्र के तीसरे प्रोग्राम में मुफस्सिरे कुरआन मौलाना अब्दुस्सुबहान नदवी साहब ने छात्रों को अपने तालीमी साल को उद्देश्यपूर्ण बनाने और नैतिकता पर चलने की प्रेरणा दी। आपने फरमाया कि जिंदगी श्रेष्ठ चुनाव और सही उपयोग का नाम है। छात्रों को कभी खुद को कमतर नहीं समझना चाहिए और हमेशा अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए। उन्होंने मानवीय जीवन के चार बुनियादी स्तंभों पर रोशनी डाली।

(1) सच्चा अक़ीदा

Scanned with OKEN Scanner

(2) शर्म–ओ–हया
(3) अमानतदारी (4) अदब।

उन्होंने ज़ोर दिया कि हमें अपने दैनिक कार्यों से अधिक अपने आपसी व्यवहार (मुआमलात) में सफाई और पारदर्शिता पैदा करनी चाहिए।

सत्र के चौथे प्रोग्राम में मौलाना खालिद नदवी गाजीपुरी ने अपने आध्यात्मिक अंदाज में छात्रों के भीतर नई रूह फूँक दी। उन्होंने कहा कि दुनिया में अल्लाह के दो ही रूप (मजहर) मुख्य हैं एक काम जो नश्वर (फानी) है, और दूसरा ''कलाम'' जो शाश्वत (ला–फानी) है। उन्होंने छात्रों को गर्व महसूस कराते हुए कहा कि अल्लाह ने उन्हें अपने कलाम (कुरआन) के लिए चुना है, और जो इस कलाम के रखवाले हैं वे कभी मिट नहीं सकते। उन्होंने छात्रों को नसीहत दी कि वे किताबों से गहरा रिश्ता जोड़ें और अपने किरदार व इल्म में बरकत के लिए कुरआन को फिक्र और अजमत के साथ पढ़ें। यह सारे प्रेरक संबोधन दारुल उलूम नदवतुल उलमा की आलीशान जामा मस्जिद में छात्रों के मध्य हुए, जो नए संकल्प के साथ अपने ज्ञान के सफर के लिए तैयार थे।

जमीयतुल–इस्लाह के मंच से हजरत नाज़िम साहब का तलबा के लिए महत्वपूर्ण सन्देश:–

इसी क्रम में नदवा कैंपस में छात्र संघ के चुनाव संपन्न हुए, जिसमें तकमील–ए–शरीया के छात्र मोहम्मद यासिर को अध्यक्ष, अब्दुल्लाह मुजाहिद को उपाध्यक्ष, अनस खान एवं अन्य को सदस्य चुना गया। जमीयतुल –इस्लाह के इसी इफ़्तिताही प्रोग्राम में नवनिर्वाचित जिम्मेदारों के बीच कार्यभार का वितरण किया गया। इस अवसर पर "जमीयतुल–इस्लाह" के ऐतिहासिक मंच से नदवतुल–उलमा के प्रबंधक हज़रत मौलाना सय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी का संबोधन न केवल एक औपचारिक भाषण था, बल्कि यह छात्रों के लिए भविष्य का एक मुकम्मल रोडमैप था। आप ने अपनी बात की शुरुआत इस अंजुमन की गौरवशाली विरासत से की, जिसकी स्थापना 1916 में हुई थी। आपने बताया कि इस मंच ने अपने–अपने दौर में ऐसे महान व्यक्तित्व तैयार किए हैं जिन्होंने न केवल हिंदुस्तान, बल्कि पूरी दुनिया में दीन की अजीम खिदमत अंजाम दी। मौलाना ने ''आगाज़'' (शुरुआत) की अहमियत पर जोर देते हुए कहा कि यदि छात्र अपनी इस नई यात्रा की शुरुआत मजबूत इरादों और हौसलों के साथ करेंगे, तो मंजिल की राहें खुद–ब–खुद आसान होती चली जाएँगी। आपने ज़बान व बयान की ताक़त क्या होती है? इसका हदीस ''इन्न मिनल बयानि ल–सिहरा'' से उल्लेख करते हुए समझाया कि प्रभावी वाणी में जादू जैसा असर होता है, जो सोए हुए दिलों को जगा सकता है और समाज में बड़ा इंकलाब ला सकता है। मौलाना ने स्पष्ट किया कि आज की दुनिया में मीडिया और संचार के साधनों का उपयोग अक्सर नफ़रत और भ्रम फैलाने के लिए किया जा रहा है। ऐसे में नदवा के छात्रों की यह जिम्मेदारी है कि वे अपनी जबान और कलम में ऐसी ताकत और मिठास पैदा करें कि लोग सत्य (हक़) की ओर आकर्षित होने पर मज़बूर हो जाएँ। आप ने कहा कि वाणी वह शक्ति है जिससे बिगड़े हुए हालात को सुधारा जा सकता है और बिखरी हुई उम्मत को जोड़ा जा सकता है। मौलाना ने नदवतुल उलमा के बुनियादी मकसद की याद दिलाते हुए कहा कि यहाँ का गौरव ''तफक्कुह फिद्दीन'' (दीन की गहरी समझ) के साथ–साथ

Scanned with OKEN Scanner

इन्जार–ए–क़ौम (क़ौम की रहनुमाई) का है।

आज के दौर में बहुत से लोग खुद को असहाब–ए–फिक्र *(Thinker)* समझकर दीन की ऐसी व्याख्या कर रहे हैं, जिसका असल इस्लाम से कोई वास्ता नहीं होता। ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में छात्रों को अपने इल्म में ऐसी पुख्तगी और गहराई पैदा करनी चाहिए कि वे किसी भी वैचारिक भटकाव का शिकार न हों। यहाँ रहने के दौरान कुरआन, हदीस और शरीयत के इल्म में इतनी महारत हासिल करें कि वे इस्लाम के बेहतरीन तर्जुमान बन सकें। उन्होंने आधुनिक तकनीक, विशेषकर मोबाइल के इस्तेमाल पर गहरी नसीहत देते हुए कहा कि इल्म एक ऐसी चीज है जो इंसान से उसका ''सब कुछ'' माँगती है। यदि आप अपनी पूरी जिंदगी इल्म की राह में खपा देंगे, तब जाकर इसका थोड़ा हिस्सा हासिल होगा। आज की ''कच्ची उम्र'' में तकनीक का बे–एहतियात इस्तेमाल छात्रों की सोचने और समझने की शक्ति को कमजोर कर रहा है। मौलाना ने आह्वान किया कि मोबाइल और इंटरनेट को समय बर्बाद करने का जरिया बनाने के बजाय, इसे पूरी दुनिया तक हक का पैगाम पहुँचाने का माध्यम बनाएँ।

दावत का सलीका और वैश्विक नेतृत्व!:–

संबोधन के अगले चरण में मौलाना ने दावत और तब्लीग के प्रभावी तरीकों पर चर्चा की। उन्होंने हजरत मौलाना राबे हसनी नदवी साहब के एक महत्वपूर्ण कथन का जिक्र किया कि ''बात पहुँचाने के लिए जबान काफी है, लेकिन कैफियत पहुँचाने के लिए ''अदब'' (साहित्य) की ज़रूरत है''। उन्होंने छात्रों को प्रेरित किया कि वे उर्दू और अरबी के साथ–साथ अंग्रेजी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी महारत प्राप्त करें। उन्होंने समझाया कि अल्लाह ने हर नबी को उसकी कौम की जबान में भेजा था, इसलिए हमें भी आधुनिक युग की जरूरतों के हिसाब से खुद को तैयार करना होगा ताकि हम वैश्विक स्तर पर अपनी बात तर्क और दलीलों के साथ रख सकें। मौलाना ने मनोविज्ञान *(Psychology)* और इतिहास के अध्ययन की अहमियत पर भी बात की। हजरत मौलाना अली मियाँ नदवी (रह0) के हवाले से उन्होंने कहा कि ''बंद दरवाज़े के बजाय खुले दरवाजे से दाखिल होना सीखो''। इसका अर्थ यह है कि दावत देते समय सामने वाले की मानसिकता और संवेदनाओं का ध्यान रखना चाहिए ताकि हमारी हैसियत एक हमदर्द और मेहमान की हो, न कि किसी जबरदस्ती घुसने वाले की। दावत के काम में सबसे ज़्यादा असर आपके ''अखलाक़'' (चरित्र) और मुहब्बत का होता है, जो बड़े से बड़े विरोधी का दिल भी जीत सकता है। अंत में, हजरत ने छात्रों को आत्महीनता *(Inferiority Complex)* से बचने और अपनी छिपी हुई सलाहियतों को पहचानने की प्रेरणा दी। आपने कहा कि इंसान अपनी क्षमता का बहुत छोटा हिस्सा इस्तेमाल करता है, जबकि अल्लाह ने उसके अंदर आसीमित छमतायें रखी हैं। यदि छात्र अपनी इच्छाओं (ख़्वाहिशात) को दबा कर मेहनत और इख़्लास के साथ काम करें, तो वे उम्मत के लिए एक अनमोल सरमाया साबित होंगे। उन्होंने भरोसा जताया कि हिंदुस्तान के ये नौजवान न केवल मुल्क, बल्कि पूरे आलम–ए–इस्लाम की कयादत करने की सलाहियत रखते हैं। कार्यक्रम का समापन सामूहिक संकल्प और हज़रत की दुआ के साथ हुआ।

❖❖❖

Scanned with OKEN Scanner

प्लेटलेट्स बढ़ानी है तो अनार, पपीता और कीवी खाएं

डॉ0 विजय सेठ

पोषक तत्वों से भरे होते हैं अनार, पपीता और कीवीः–

प्लेटलेट्स ऐसी कोशिकाएं होती हैं, जो खून बहने से रोकती हैं। साथ ही क्षतिग्रस्त टिश्यू को ठीक करने का भी काम करती हैं। प्लेटलेट्स का हमारे शरीर में अहम रोल होता है। ऐसे में ज़रूरी है कि प्लेटलेट काउंट सही बना रहे। डाइट में कई तरह की चीजों को शामिल कर इसे ठीक किया जा सकता है।

पपीता है काम काः–

प्लेटलेट्स बढ़ाने के लिए पपीता खा सकते हैं। विशेषज्ञों की मानें तो पपीता या पपीते के पत्ते के एक्सट्रैक्ट के सेवन से प्लेटलेट्स काउंट बढ़ाने में मदद मिलती है। पपीते के पत्तों से बने एक्सट्रैक्ट में बायो–ऐक्टिव कंपाउंड पाया जाता है। यह शरीर के इम्फ्लेमेशन यानी सूजन को कम करने और प्लेटलेट्स बढ़ाने के लिए मददगार साबित हो सकता है।

अनार के फायदे अनेकः–

अनार आयरन का अच्छा स्रोत है, जो ब्लड काउंट बढ़ाने में अहम भूमिका निभा सकता है। अनार में फाइबर, विटामिन के, सी, और बी, आयरन, पोटैशियम, जिंक और ओमेगा–6 फैटी एसिड होते है। साथ ही इसमें एंटीऑक्सिडेंट, ऐंटी–इंफ्लेमेटरी के साथ ही इम्यूनिटी बढ़ाने वाले तत्व भी शामिल होते हैं। ऐसे में प्लेटलेट्स की कमी से जूझ रहे मरीजों को अनार खासतौर से अपने खानपान में शामिल करना चाहिए।

कीवी है गुणों की खानः–

डेंगू में कीवी के सेवन करने की सलाह दी जाती है। इसके सेवन से प्लेटलेट्स बढ़ती है। कीवी में कई ऐसे तत्व होते है जो इम्यूनिटी बूस्ट करने में मदद करते हैं। कीवी विटामिन–सी, विटामिन–के, फोलेट और पोटैशियम का अच्छा स्रोत है। इससे इम्यूनिटी सिस्टम बेहतर तरीके से काम करता है और शरीर में इलेक्ट्रोलाइट का स्तर भी संतुलित रहता है।

हरी पत्तेदार सब्जियांः–

हरी पत्तेदार सब्ज़ियाँ विटामिन–के का अच्छा स्रोत हैं। हरी पत्तेदार सब्ज़ियों में आप पालक, बंदगोभी जैसी सब्ज़ियों को डाइट में शामिल कर सकते है। ये पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं, जो आपके बैलेस्ड डाइट का अहम हिस्सा बन सकते है।

बन्द गोभी

इसका जन्म स्थान पश्चिमी यूरोप तथा मेडीटेरेनियम समुद्र का उत्तरी किनारा बताया जाता है। भारत वर्ष में इसकी खेती पिछली कुछ शताब्दियों से शुरू हुई जो कि यूरोप से आयी है।

बंद गोभी का प्रयोग सलाद और अचार तथा सब्जी तथा करी के रूप में किया जाता हैं और सूखी हुई सब्जियों के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह पाचन में सहायक होता है।

बंदगोभी में खनिज पदार्थ, विटामिन ''ए'', बी–। बी–2 तथा ''सी'' की अधिक मात्रा पायी जाती है। बंदगोभी को सिर्फ आहार की दृष्टि से ही नही बल्कि चिकित्सकों की वरीयता सूची में भी उच्चस्थान प्राप्त है विभिन्न अनुसन्धानों ने यह सिद्ध कर दिया है कि नियमित रूप से कच्ची बंदगोभी (औसत आकार का लगभग आधा) खाने से कई किस्मों के कैंसर से बचाव किया जा सकता है जिनमें से स्तन और प्रोस्टेंट कैंसर प्रमुख हैं। ◆◇◆

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू अब्दुर्रहमान नदवी

डीजे के शोर में हार्ट अटैक से मरी 140 मुर्ग़ियाँः—

सुलतानपुरः डीजे के शोर से एक पोल्ट्री फार्म की 140 मुर्गियों की हार्ट अटैक से मौत हो गई। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में भी इस पुष्टि के बाद पुलिस ने डीजे संचालक कवि यादव निवासी कुड़वार के खिलाफ *FIR* दर्ज की है।

जानकारी के मुताबिक, बल्दीराय थाना क्षेत्र के दरियापुर गांव में 25 अप्रैल को कुड़वार के पूरे राम भद्र पुरवा से बारात आई थी। आरोप है कि बारात में आए डीजे संचालक ने बेहद तेज़ आवाज़ में गाने बजाए। इससे पास में स्थित साबिर अली के पोल्ट्री फार्म की 140 मुर्गियां हार्ट अटैक से मर गई। चीफ वेटनरी ऑफिसर (सीवीओ) प्रमोद शर्मा ने बताया कि पोस्टमॉर्टम में हार्ट अटैक से मुर्गियों की मौत की पुष्टि हुई।

अप्रैल का वो दिन जब दुनिया के 50 सबसे गर्म शहर भारत में थेः—

भारत इस समय भीषण गर्मी की चपेट में है और हालात इतने गंभीर है कि दुनिया के सबसे गर्म शहरों की सूची में बड़ी संख्या भारतीय शहरों की है। एक हालिया विश्लेषण के अनुसार अप्रैल के आखिर में एक दिन ऐसा था जब दुनिया के 50 सबसे गर्म शहर भारत में दर्ज किए गए। *CNN* की रिपोर्ट में कहा गया है कि 27 अप्रैल को इन 50 शहरों का औसत अधिकतम तापमान 44.7 डिग्री सेल्सियस रहा।

गर्मियाँ हो रहीं पहले से ज़्यादा लंबीः—

विशेषज्ञों का कहना है कि भारत में गर्मियां पहले की तुलना में ज्यादा लंबी, ज्यादा गर्म और जल्दी शुरू हो रही हैं। गर्मी का असर लोगों की सेहत, खेती, बिजली की मांग और पानी की उपलब्धता पर पड़ सकता है। बच्चों, बुजुर्गों और बाहर काम करने वाले लोगों के लिए खतरा सबसे ज़्यादा बताया गया है।

मुंबईः 9 साल की अनैया समुद्र में 17 कि0मी0 तैरीः—

पुरुषोत्तम कनौजिया, नवी मुंबई के डोंबिवली में रहने वाली 9 साल की अनैया जगदीश कुंती कारकर ने उलवा से गेटवे ऑफ इंडिया तक लगभग 17 किलोमीटर का समुद्री सफर तैरकर इतिहास रच दिया है। पांचवीं क्लास की स्टूडेंट अनैया ने 1 मई को रात करीब 2 बजे सफर शुरू किया और सुबह 6 बजे वह गेटवे ऑफ इंडिया पहुंच गई।

भारतीयों ने AI टूल से बनाई एक अरब तस्वीरेः—

देश में *OpenAI* के इमेज टूल *ChatGPT Images* 2.0 के इस्तेमाल में तेज़ उछाल देखा गया। लॉन्च के एक महीने से भी कम समय में भारतीय यूजर्स ने इस टूल से 1 अरब से ज्यादा तस्वीरें बनाई है। भारत इस फीचर का सबसे बड़ा इस्तेमाल करने वाला बाजार बन गया है।

❖❖❖

Scanned with OKEN Scanner

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांकः **22/05/2026** تاریخ ____________

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंजा़म दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकज़ा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के कि़लों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़—ए—जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN0000125
ONLINE DONATION LINK: https://www.nadwa.in/donation

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

ZAKAT — NADWATUL ULAMA

ATIYA — NADWATUL ULAMA

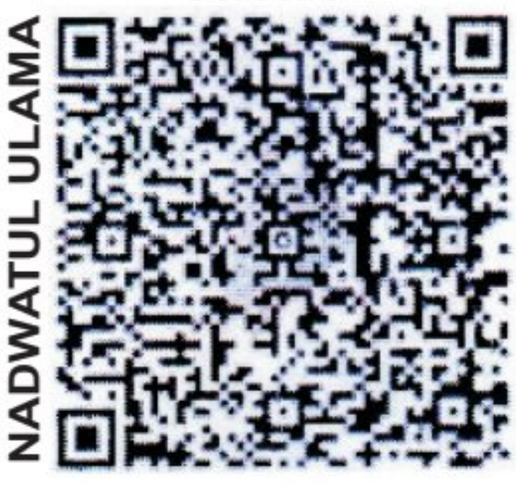

BUILDING — NADWATUL ULAMA

UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात/अतिया/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा—ए—करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए न0 08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961 के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

Scanned with OKEN Scanner

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 25 - Issue 04

Whatsapp & Call 9559844716
Office Timing : 08:00 AM To 1:00PM
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3

Scanned with OKEN Scanner